₹15/-

वर्ष 42 अंक 9 सितम्बर 2015

# हँसती दुनिया

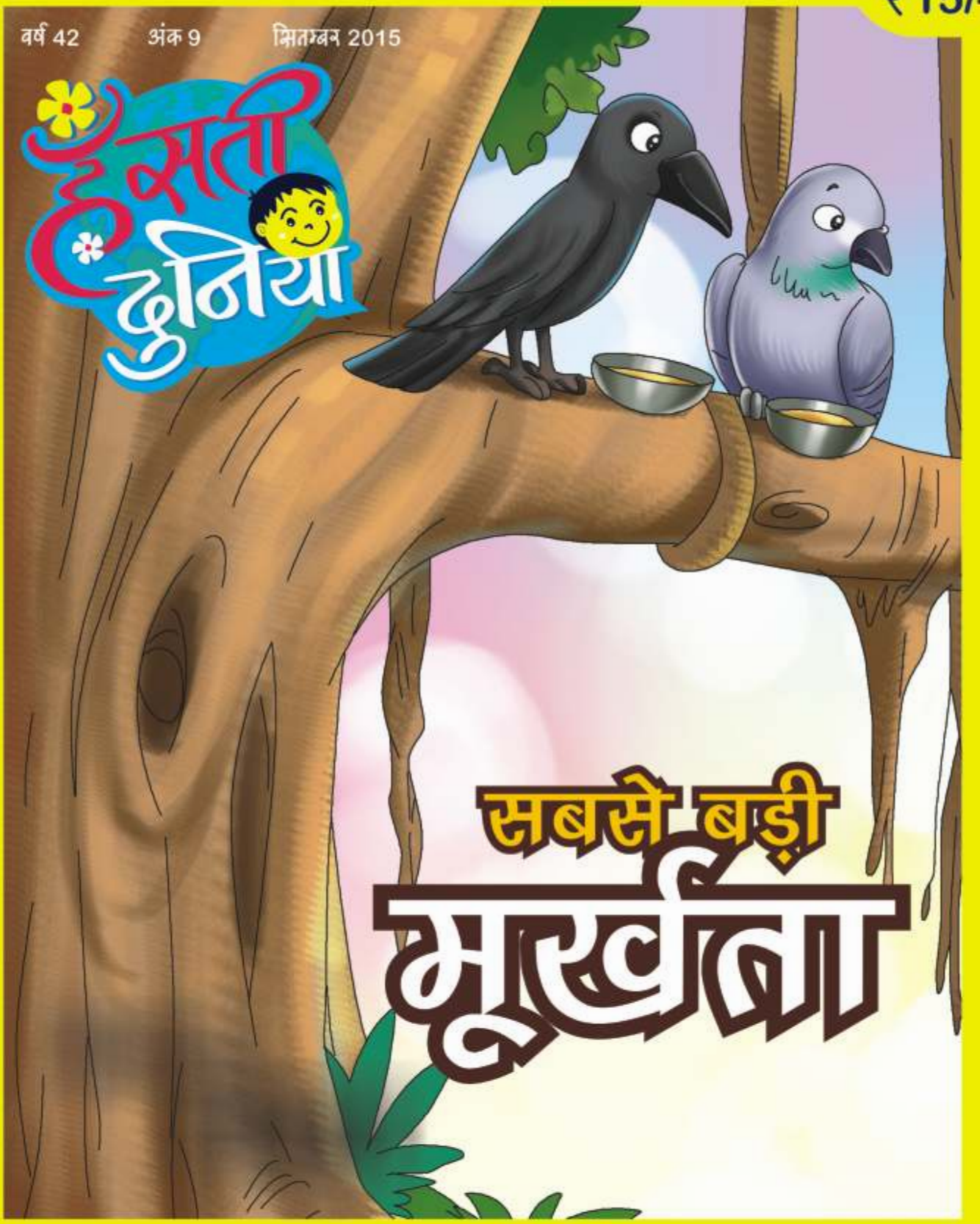

## सबसे बड़ी मूर्खता

कभी न भूलो • लालच का फल • हिन्दी से है हिन्दुस्तान • सरसों के फूल
हिन्दी की जीत • माँ है बड़ी महान • रेल रेल है • दादा जी • राष्ट्रीय पशु बाघ

# हँसती दुनिया

• वर्ष 42 • अंक 9 • सितम्बर 2015 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

**सी. एल. गुलाटी**, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु रेव इंडिया, ए–27, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–II, नई दिल्ली–110028 से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

**विमलेश आहूजा**
सम्पादक

**सुभाष चन्द्र**
सहायक सम्पादक



**Email:** editorial@nirankari.org **Ph.:** 011-47660200

**Fax:** 01127608215

**Website:** http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org



## Subcripation Value

| | India/ Nepal | UK | Europe | USA | Canada/ Australia |
|---|---|---|---|---|---|
| Annual | Rs.150 | £15 | € 20 | $25 | $30 |
| 5 Years | Rs.700 | £70 | € 95 | $120 | $140 |

Other Countries

Equillant to U.S. Dollars as mentioned above.

## स्तम्भ


5 सबसे पहले
9 कभी न भूलो
11 क्या आप जानते हैं?
21 वर्ग पहेली
34 भैया से पूछो
38 पढ़ो और हँसो
46 जन्मदिन मुबारक
47 आपके पत्र मिले
48 रंग भरो परिणाम


## चित्रकथाएं


12 दादा जी
42 किट्टी

## कहानी


6 **सबसे बड़ी मूर्खता**
: राधेलाल 'नवचक्र'

16 **सबसे जहरीला कौन ?**
: रेनू सैनी

24 **लालच का फल**
: राजकुमार जैन 'राजन'

36 **बुद्धिमान खरगोश**
: किशोर डैनियल

40 **गूंगी पेन बहन**
: साकलचन्द पटेल


## कविता


10 **बरसाती जीवन में खुशियां**
: रामअवध राम

10 **रेल रेल है**
: गफूर 'स्नेही'

19 **हिन्दी से है हिन्दुस्तान**
: दीपक कुमार 'दीप'

20 **हिन्दी एक गुलशन**
: डॉ. सेवा नन्दवाल

21 **सौ केलों का गुच्छा**
: हरजीत निषाद

22 **माँ है बड़ी महान**
: महेन्द्र सिंह शेखावत

27 **चार क्षणिकाएं**
: डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

33 **सरसों के फूल**
: रामअवध राम

33 **कमी है तो बस ...**
: दिविता जुनेजा

35 **राष्ट्रीय पक्षी मोर**
: रेनू भटनागर


## विशेष / प्रेरक


18 **ऐसे थे डॉ. राधाकृष्णन**
: जगतार 'चमन'

18 **हिन्दी की जीत**
: नेहा नागपाल

23 **सद्भाव और सम्मान**
: राधेलाल 'नवचक्र'

26 **सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी**
: विकास अरोड़ा

28 **राष्ट्रीय पशु बाघ**
: डॉ. परशुराम शुक्ल

32 **अनमोल वचन**
: भूपिन्दर धवन
:रामअवध राम गुरैनी

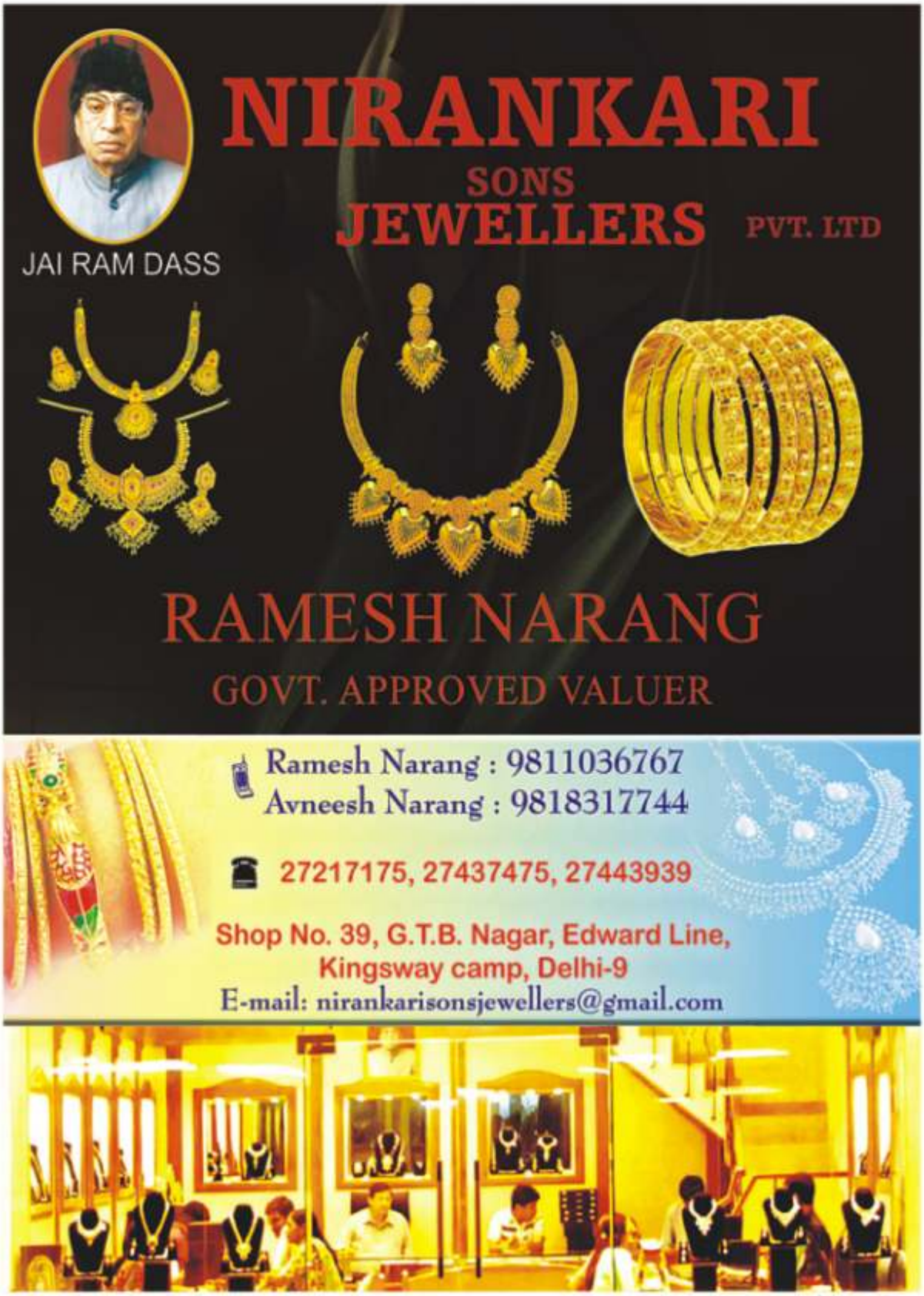
NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD
JAI RAM DASS
RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER
Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744
27217175, 27437475, 27443939
Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

# उचित मार्गदर्शन

विवेक बहुत ही चतुर एवं शरारती स्वभाव का लड़का है। एक बार वह अपने मोहल्ले में खेल रहा था। विवेक की शिकायत लेकर एक बच्चा उसके घर गया और विवेक की माँ से बोला– आंटी, आपके बेटे ने मुझे बिना किसी बात के थप्पड़ मारा और भाग गया। विवेक की शिकायत कर वह अपने घर वापस लौट गया। जैसे ही विवेक घर पहुँचा उसकी माँ ने उसे एक थप्पड़ मारा और बिना बात किए वहाँ से चली गई। विवेक बहुत परेशान और दुखी होकर सोचने लगा कि माँ ने मुझे क्यों मारा?

विवेक के पूछने पर माँ ने उसे समझाया कि जिस बालक को तुमने आज मारा था, उसको भी इसी तरह परेशानी हुई होगी और दुखी हुआ होगा।

अगले दिन विवेक एक तितली को पकड़कर ले आया, वह फड़फड़ा रही थी पर कुछ कर नहीं पा रही थी। यह देख उसके पिता ने समझाया कि ऐसा मत करो परन्तु वह नहीं माना। पिता ने रात को सोते हुए विवेक के पैरों को बांध दिया। जब वह उठा तो रोने लगा कि मेरे पैर क्यों बांध दिये। पिता ने उसके पैरों को खोलते हुए समझाया, 'कल तितली को तुमने पकड़े रखा वह भी इसी तरह दर्द में रही होगी और स्वछन्द होकर जीना चाहती होगी। तुम्हें इस बात का एहसास हो इसीलिए तुम्हारे पैर बांध दिए थे।'

आज विवेक को माता और पिता दोनों से सबक मिल चुके थे। वह अन्दर ही अन्दर परेशान और गुस्से में था परन्तु वह अपने पर काबू पाकर स्कूल चला गया।

स्कूल में अध्यापक बता रहे थे कि आज जब मैं स्कूल आ रहा था तो रास्ते में मुझे एक स्त्री मिली। मैंने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम बुद्धि बताया और उसने कहा कि वह दिमाग में रहती है। थोड़ी देर बाद एक पुरुष मिला और उसने अपना नाम क्रोध बताया और कहा कि वह भी दिमाग में रहता है।

–परन्तु वहाँ तो बुद्धि रहती है– अध्यापक ने कहा। –जी हाँ वहाँ बुद्धि तो रहती है लेकिन जब मैं आ जाता हूँ तो वहाँ से बुद्धि भाग जाती है।

इन सारी बातों का मंथन करने से विवेक को अपनी भूल का एहसास हुआ और विवेक का विवेक उसे इस तरह की भूल न करने की प्रेरणा दी।

प्यारे साथियों, हमारे पहले शिक्षक माता–पिता होते हैं। वे अपना दायित्व बच्चों को उचित मार्गदर्शन देकर हमेशा करते रहते हैं और संस्कारित करते रहते हैं। घर से ही अच्छे संस्कार मिलें तो एक सुन्दर वातावरण समाज में तैयार हो जाता है। बाकी कार्य तो शिक्षक अर्थात् अध्यापकगण स्कूल में पूरा कर देते हैं और अच्छी शिक्षा देते हैं।

सितम्बर माह में शिक्षक दिवस मनाया जाता है, अगर देखा जाए तो हर दिन हर समय शिक्षा ग्रहण करने का समय होता है। हमारे अध्यापक, माता–पिता, भाई–बन्धु, समाज तो शिक्षक हैं ही; प्रकृति से भी हम हर समय कुछ न कुछ सीख सकते हैं। चाहिए तो केवल सीखने की प्रवृति।

**– विमलेश आहूजा**

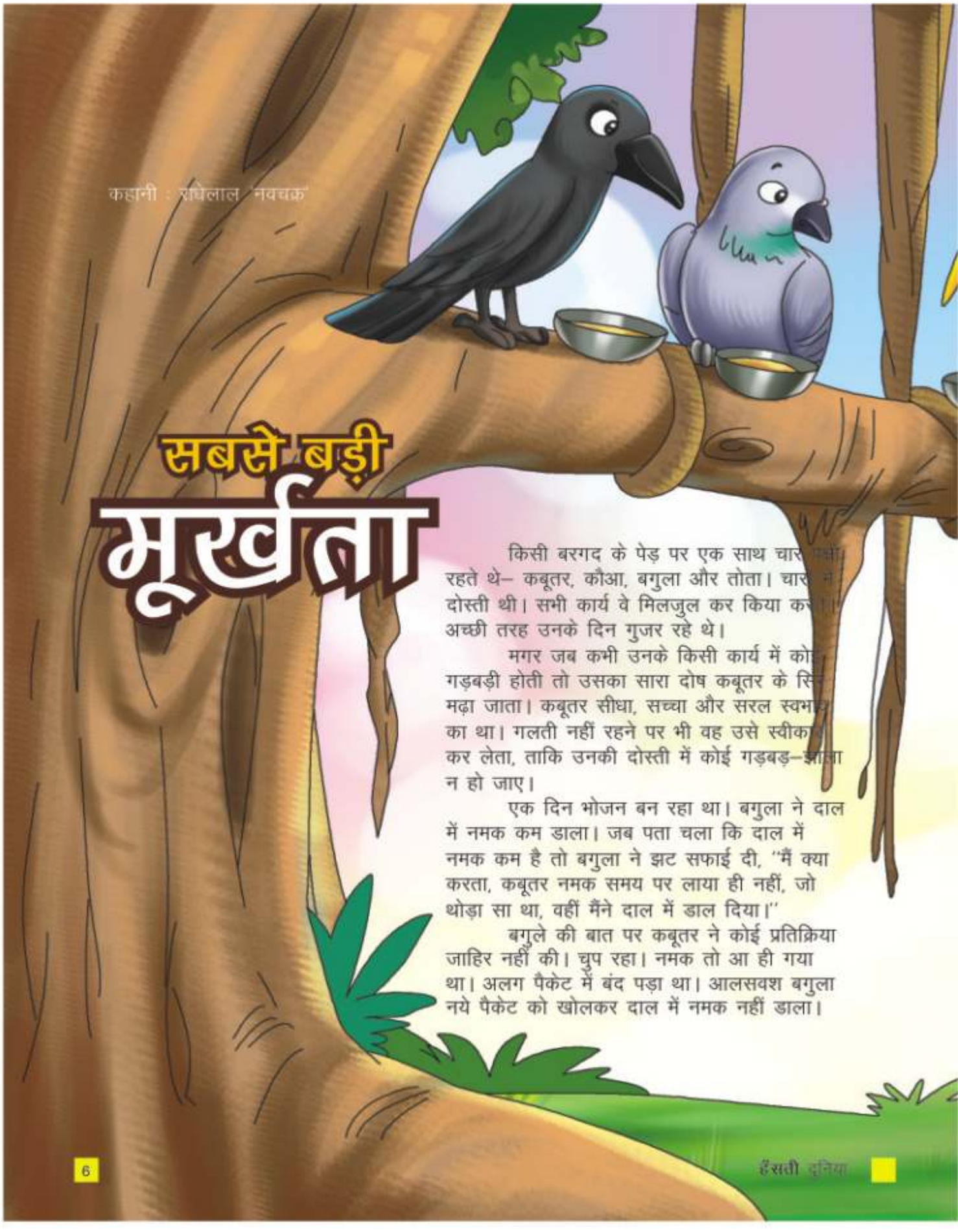

कहानी : रघिलाल 'नवचक्र'

# सबसे बड़ी मूर्खता

किसी बरगद के पेड़ पर एक साथ चार पक्षी रहते थे– कबूतर, कौआ, बगुला और तोता। चारों में दोस्ती थी। सभी कार्य वे मिलजुल कर किया करते। अच्छी तरह उनके दिन गुजर रहे थे।

मगर जब कभी उनके किसी कार्य में कोई गड़बड़ी होती तो उसका सारा दोष कबूतर के सिर मढ़ा जाता। कबूतर सीधा, सच्चा और सरल स्वभाव का था। गलती नहीं रहने पर भी वह उसे स्वीकार कर लेता, ताकि उनकी दोस्ती में कोई गड़बड़–झाला न हो जाए।

एक दिन भोजन बन रहा था। बगुला ने दाल में नमक कम डाला। जब पता चला कि दाल में नमक कम है तो बगुला ने झट सफाई दी, "मैं क्या करता, कबूतर नमक समय पर लाया ही नहीं, जो थोड़ा सा था, वहीं मैंने दाल में डाल दिया।"

बगुले की बात पर कबूतर ने कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की। चुप रहा। नमक तो आ ही गया था। अलग पैकेट में बंद पड़ा था। आलसवश बगुला नये पैकेट को खोलकर दाल में नमक नहीं डाला।

कबूतर ने यह स्पष्टीकरण नहीं दिया। सोचा, बगुला बुरा मान जाएगा। दोस्ती टूट सकती है। चुप रहना ही ठीक समझा।

एक बार कौआ की असावधानी से तेल का पीपा लुढ़क गया। झट उसने कबूतर को झिड़क दिया, "तुम किस जगह तेल का खुला पीपा रखते हो? सारा तेल गिरकर बह गया।"

कबूतर कह सकता था, "पीपा तो ठीक ही जगह रखा था। देखकर कोई काम करना चाहिए। हड़बड़ काम शैतान का होता है। मगर उसने ऐसा नहीं कहा। चुप्पी साध ली। बात बनाने पर कौआ दुःखी हो जाता। मेल नहीं रहता।

ऐसे ही एक दिन तोता बाजार से कोई फल खरीद कर लाया। फल सड़ा निकला। तोते ने इसका दोष कबूतर के सिर यों मढ़ा, "पैसे ही कबूतर ने मुझे देर से दिये। बाजार पहुँचते–पहुँचते अंधेरा घिर आया था। फल वाले ने अंधेरे का लाभ उठाकर मुझे सड़े फल दे दिए।"

बात ऐसी नहीं थी। कबूतर ने तोते को बहुत पहले पैसे दिये थे। तोता ही देर से बाजार के लिए निकला था। तोता जानता था, वह जो कुछ कहेगा, कबूतर कभी उसकी बात का विरोध नहीं करेगा। सहज स्वीकार लेगा। अतएव उसने अपनी गलती बेझिझक कबूतर के सिर मढ़ दिया। मौन रह कर कबूतर ने उसे स्वीकार भी कर लिया ताकि आपसी प्रेम बना रहे। दोस्ती निभती चले।

इस तरह सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा था। वर्षों मजे से गुजरे।

कुछ दिनों के बाद कोई जरूरी काम से कबूतर दो सप्ताह के लिए बाहर चला गया। जब वह लौट कर आया तो उस पेड़ पर किसी को नहीं देखा। वह बहुत चिन्तित हुआ। उसने तीनों की

खोज–खबर लेनी शुरू कर दी। बगुले से भेंट हुई तो पता चला कि आपसी मतभेद की वजह से तीनों लड़–झगड़ कर एक–दूसरे से अलग हो गए। दोस्ती टूट गयी।

कबूतर ने फिर सबको एक जगह एकत्र किया और कहा, "हम लोगों में एक ही बुराई है जिसकी वजह से हमारी दोस्ती टूटी।"

"क्या बुराई है?" सबने एक साथ पूछा।

"हम अपनी गल्तियों को स्वीकार करना नहीं चाहते। दूसरे पर मढ़ने की कोशिश करते हैं। यह अच्छी आदत नहीं है। दोस्ती टूटने से आज हम सब की परेशानी ज्यादा बढ़ गयी है, पहले से ज्यादा दु:खी हैं। याद रहे, मिलकर रहने में जो सुख है, आनन्द है; वह एकाकीपन में कभी नहीं हो सकते।"

"बिल्कुल सही कहा?" सबने स्वीकारा।

"हम चाहें तो फिर मिलकर एक साथ रह सकते हैं। सुख और आनन्दपूर्ण जीवन जी सकते हैं। मगर एक शर्त हैं। हम में से जिस किसी से जब भी कोई गलती हो, उसे दूसरे पर कभी न मढ़ें। अपनी गलती सहज स्वीकार कर लें। इससे हम छोटे नहीं हो जाएंगे बल्कि यह हमारा बड़प्पन होगा। हमारी दोस्ती पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। वह गहरी होती चली जाएगी। सभी का जीवन सुखमय–आनन्दमय होगा। गलती तो जीवन में हर किसी से होती है। उसे स्वीकार कर ही हम उसमें सुधार ला सकते हैं – है न?" कबूतर ने सवालिया निगाह तीनों पर डाली।

"अवश्य", तीनों की मिली–जुली आवाज आई।

"जानते हो, अपनी गलती नहीं स्वीकार करना अक्लमंदी नहीं, सबसे बड़ी मूर्खता है। इसी मूर्खता की वजह से हम एक–दूसरे से अलग होकर बिखर गए। हमारे सुख, चैन और आनन्द खो गए। हमारा जीवन नरकमय हो गया।" कबूतर ने अपनी बात पूरी की।

"अब हम ऐसी मूर्खता कभी नहीं करेंगे। मिलकर रहेंगे।" समवेत स्वर उभरा।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

# कभी न भूलो

## हिन्दी दिवस पर विशेष

- हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

  स्वामी दयानन्द सरस्वती

- मैं अपनी बात अपनी भाषा हिन्दी में ही कहूँगा। जिसको गरज होगी, वह सुनेगा। आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करेंगे तो हिन्दी का दर्जा बढ़ेगा।

  महात्मा गाँधी

- भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले व्यक्ति ही सच्चे भारतीय बन्धु है।

  महर्षि अरविन्द घोष

- कोई देश विदेशी भाषा द्वारा न उन्नति कर सकता है और न अपनी भावना की अभिव्यक्ति ही कर सकता है।

  डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

- राजभाषा के रूप में हिन्दी देश की एकता में अधिक सहायक होगी। इस पर दो मत हो ही नहीं सकते।

  पं. जवाहर लाल नेहरू

- हिन्दी के बिना हिन्दुस्तान अपने गौरव को प्राप्त नहीं कर सकता।

  राजर्षिपुरुषोत्तम दास टंडन

- जो भाषा हिन्दुस्तान के नगर, ग्राम तथा सर्वसाधारण में बोली जाए वह सिवाय हिन्दी के दूसरी हो ही नहीं सकती।

  पं. बालकृष्ण भट्ट

- हिन्दी जानने वाला आदमी सम्पूर्ण भारतवर्ष में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिन्दी बोलने वाले मनुष्य मिल सकते हैं। हिन्दी सीखने का कार्य एक ऐसा त्याग है जिसे दक्षिण भारत के निवासियों को, राष्ट्र की एकता के हित में करना चाहिए।

  श्रीमती एनी बेसेंट

बाल कविता : रामअवध राम

# बरसाती खुशियां जीवन में

बाल पत्रिका हँसती दुनिया।
सबसे उत्तम सबसे बढ़िया।
शिक्षा पूर्ण पाठ हैं इसके।
मन को अच्छे लगते सबके।
ज्ञान करा विद्वान बनाती।
मन के सारे दोष मिटाती।
बाल भविष्य सजाने वाली।
जीवन सुखद बनाने वाली।
नाम से बच्चों के छपती है।
समझ बड़ों को भी देती है।
बाल पत्रिका हँसती दुनिया।
जीवन में बरसाती खुशियां।

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

# रेल रेल है

रेल रेल है तालमेल है,
मची रहती रेल पेल है।
रेल में जो बेटिकट हैं
छिपते दबते झिझक हैं।

देखो छूटे न सामान,
कीमती उसमें अटके प्राण।
पसंद नहीं घालमेल है
मची रहती रेलपेल है।

खतरे का व्यर्थ खेल है।
मची रहती रेलपेल है।

चलो निकलो, आगे भीड़
धूल पसीना होती चिढ़।
भागे दौड़े पटरी पर है।
जैसे राही डगर पर है।

गाँव घर टूटे खपरैल हैं
मची रहती रेलपेल है।

चलो अच्छा हुआ आखिर
पहुँचे आकर अमृतसर।
घर पहुँचे तो चैन करार।
घर में मिलता सबका प्यार।

निकला पसीना तोड़ झेल है।
मची रहती रेल पेल है।

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

# क्या आप जानते हैं?

- अगर आप छींकते वक्त अपनी आँखें जबर्दस्ती से खुली रखने की कोशिश करें तो आप की eye ball (आँख की पुतली) तड़क सकती है।

- आस्ट्रेलिया की एक छोटी सी duck bill अपने गालों में ज्यादा से ज्यादा 600 कीड़े स्टोर कर सकती है। इनके गालों में विशेष थैलियां होती है, जो इन्हें ऐसा कर सकने के योग्य बनाती हैं।
- सिर्फ एक घंटा हेडफोन लगाने से हमारे कानों में जीवाणुओं की तादाद सात सौ गुना बढ़ जाती है।
- दक्षिण अफ्रीका के जंगलों में जहरीली त्वचा वाले मेढ़क पाए जाते हैं। आदिवासी इनके जहर को बाणों में लगाकर शिकार करते हैं।

- चींटियां एक–दूसरे का पीछा करने के लिए फेरोमोन ट्रेल्स का इस्तेमाल करती हैं।
- बिल्लियां एक दिन में 18 घंटे से ज्यादा सोती हैं, पर हम मानवों की तरह गहरी नींद नहीं सोती। जरा सी हलचल होने पर जाग उठती हैं, यह देखने के लिए कि उनके आसपास का वातावरण सुरक्षित है कि नहीं।
- एक औसत लैड की पेंसिल से अगर एक लाइन खींची जाए तो वह 35 किलोमीटर लम्बी होगी। इससे 50 हजार अंगेजी शब्द लिखे जा सकते हैं।

- नील आर्मस्ट्रांग ने सबसे पहले अपना बायां पैर चंद्रमा पर रखा था और उस समय उनके दिल की धड़कन 156 बार प्रति मिनट थी।
- हाथी की चमड़ी लगभग एक इंच तक मोटी होती है और हाथी की सूंड ऊपरी होंठ और नाक से जुड़ी होती है।
- फ़िलीपीन्स में पाया जाने वाला बोया पक्षी प्रकाश में रहने का इतना शौकीन होता है कि अपने घोंसले के चारों तरफ जुगनू भरकर लटका देता है।

- शहद एकमात्र ऐसा खाद्य पदार्थ है जो कि हजारों सालों तक खराब नहीं होता।
- एक समुद्री केकड़े का दिल उसके सिर में होता है।

# दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

बच्चों कलाम जी बहुत मेहनती और लगनशील थे। बचपन से ही पढ़ाई के प्रति उनकी विशेष रूचि थी। वे मन लगाकर अपने अध्ययन कार्य को करते थे। उनके सभी अध्यापक उन्हें बहुत पसंद करते थे। अपनी पढ़ाई के लिए उन्होंने अखबार भी बेचा।
डॉक्टर कलाम अपने व्यक्तिगत जीवन में पूरी तरह अनुशासन का पालन करते थे। ऐसा कहा जाता है कि उनके चेहरे पर सदैव एक बच्चे जैसी मुस्कान बनी रहती थी, चाहे कैसा भी समय क्यों न हो! वह विपरित परिस्थितियों से घबराते नहीं थे।
कलाम जी स्वाभाविक तौर पर एक शिक्षक थे। उनकी शिक्षाएँ जीवन के प्रत्येक क्षण में व्यक्ति को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। उनका कहना था कि –
अगर आप सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो, पहले सूरज की तरह जलना सीखो!

बच्चों कलाम जी बच्चों एंव युवाओं में खासा लोकप्रिय रहे। 2011 में आई हिंदी फिल्म आई एम कलाम में, उनके सम्मान में एक राजस्थानी बच्चा छोटू खुद का नाम बदलकर कलाम रख लेता है। वास्तविक तौर पर उनका जीवन बड़ा ही प्रेरणादायक रहा।
कलाम जी को लिखने में रुचि थी। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेकों पुस्तकें एंव कविताएँ लिखी। आपकी पहली पुस्तक 'विंग्स ऑफ फायर' है जो कि भारतीय युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करती है।
कलाम जी का कहना था कि–
सपना वह नही जो आप नींद में देखते हैं यह तो एक ऐसी चीज है जो कि आपको नींद ही नहीं आने देता।

डॉक्टर कलाम जी को उनके विशेष कार्यों एवं सफलताओं के लिए अनेक सम्मानीय पुरस्कारों से कई बार सम्मानित किया गया।
हाँ दादा जी! दादा जी वह तो बड़े ही महान व्यक्ति थे।
बच्चों अब तो आप उनके बारें में बहुत कुछ जान गए होंगे।
वास्तविक तौर पर बच्चों डॉक्टर कलाम जी की जीवन गाथा किसी रोचक उपन्यास के महानायक की तरह रही हैं।
दादा जी हम भी सिर झुकाकर उन्हें प्रणाम करते है। और अब से हम भी उनकी शिक्षाओं का अनुकरण करेंगे तथा उनका महान व्यक्तित्व सदैव दुसरों को भी प्रेरणा देता रहेगा।

बाल कहानी : रेनू सैनी

# सबसे जहरीला कौन?

वीरनगर में वीरसिंह नामक राजा राज्य करते थे। वे बहुत ही दयालु और न्यायप्रिय थे। उनके राज्य में प्रजा को किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं थी। उनका मुख्य सलाहकार संपतसिंह वृद्ध हो गया था इसलिए अब वह पहले जैसी चुस्ती–फुर्ती से काम नहीं कर पाता था। एक दिन संपतसिंह बोला, "महाराज, मैं वृद्ध हो गया हूँ। अब मुझसे पहले की तरह काम नहीं होता। कृपया आप अपने लिए किसी युवा और योग्य सलाहकार को चुन लीजिए।"

संपतसिंह की बात पर वीरसिंह बोले, "नहीं–नहीं, हम तुम्हारे रहते दूसरा सलाहकार रखने की सोच भी नहीं सकते।"

इस पर संपतसिंह बोला, "महाराज, 'कुछ समय तक नया सलाहकार मेरे साथ रहेगा तो मैं अपने अनुभव से उसे बहुत कुछ सिखा दूंगा।" संपतसिंह का सुझाव वीरसिंह को पसंद आया। उन्होंने अपना सलाकार चुनने के लिए घोषणा करवा दी।

दूर–दूर से आए अनेक नवयुवक राजमहल में एकत्रित हो गये। वीरसिंह बोले, "तुम उनकी परीक्षा कैसे लोगे?"

संपतसिंह बोले, "महाराज, मैं एक ऐसा प्रश्न पूछूंगा जिसका जवाब वही व्यक्ति दे पाएगा जो समझदार, ईमानदार और विद्वान होगा।

निर्धारित दिन सभी नवयुवक राजदरबार में उपस्थित हो गये। संपतसिंह ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया और बोले, "मैं आप सभी से केवल एक प्रश्न पूछूंगा और जो उसका सही जवाब देगा, उसे ही राजा का सलाहकार चुन लिया जाएगा।" केवल एक ही प्रश्न सुनकर सभी नवयुवक खुशी से चहक उठे। सबको लगा केवल एक सवाल का जवाब देना तो बहुत सरल है।

संपतसिंह बोले, "विद्वजनों, कृपया यह बताएं कि सबसे तेज काटने वाला और जहरीला कौन होता है?" संपतसिंह के प्रश्न पर सभी नवयुवक इसका जवाब सोचने लगे। एक नवयुवक राजा से बोला, "महाराज, सबसे तेज काटने वाला ततैया होता है। उसके काटने पर इंसान की चीख निकल जाती है।" उसका जवाब सुनकर संपतसिंह चुप हो गए।

दूसरा नवयुवक बोला, "महाराज, मेरी नजर में तो सबसे तेज काटने वाली मधुमक्खी है।"

तीसरे ने कहा, "मेरे नजरिए से तो बिच्छू सबसे तेज काटता है।"

चौथा नवयुवक बोला, "महाराज, सांप का काटा तो पानी भी नहीं मांगता। इसलिए वही सबसे तेज काटने वाला वही हुआ।" इस प्रकार सभी नवयुवक अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार जवाब देते रहे लेकिन संपतसिंह को किसी का भी जवाब संतोषजनक नहीं लगा।

अब केवल एक नवयुवक ही जवाब देने से बचा हुआ था। वह नवयुवक पहरावे से साधारण लग रहा था। उसके चेहरे पर आत्मविश्वास झलक रहा था। संपतसिंह उस नवयुवक की ओर देखकर बोले, "अभी तुमने जवाब नहीं दिया। तुम इस बारे में क्या कहना चाहते हो?"

संपतसिंह की बात सुनकर वह बोला, "मेरी दृष्टि में तो सबसे ज्यादा ज़हरीले एक नहीं बल्कि दो होते हैं।" वह युवक बोला, "एक निंदक और दूसरा चाटुकार।"

यह जवाब सुनकर राजा प्रश्नवाचक मुद्रा में युवक को देखने लगा। अन्य लोग भी युवक की ओर देखते हुए बोले, "भला ये दोनों जहरीले कैसे हुए? कृपया विस्तार से बताएं।"

इस पर युवक बोला, "राजन् निंदक के हृदय में निंदा द्वेष रूपी जहर भरा रहता है। वह निंदा करके पीछे से ऐसे काटता है कि मनुष्य तिलमिला उठता है।" उसके इस जवाब पर संपतसिंह बोले, "बिल्कुल सही।"

अब युवक दोबारा बोला, "दूसरा जहरीला होता है चाटुकार जो अपनी वाणी में मीठा विष भरकर ऐसी चापलूसी करता है कि मनुष्य अपने दुर्गुणों को गुण समझकर अहंकार के नशे में चूर हो जाता है। चापलूस की वाणी चापलूस पसंद व्यक्ति के विवेक को काटकर जड़मूल से नष्ट कर देती है। अनेक ऐसे उदाहरण सामने हैं जिनमें निंदक व चापलूस ने मनुष्य को इस प्रकार काटा कि वे जड़ से समूल नष्ट हो गए।" युवक का जवाब सुनकर राजा समेत सभी दरबारी उनसे पूरी तरह सहमत हो गए।

युवक की बात सुनकर संपतसिंह राजा से बोले, "महाराज, लीजिए आज से आपको एक नया और समझदार सलाहकार मिल गया है।" ■

प्रेरक प्रसंग : जगतार 'चमन'

# ऐसे थे डॉ. राधाकृष्णन

भारत में पहली बार शिक्षक दिवस **5 सितम्बर 1962** को मनाया गया। हुआ यूं कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के छात्र उनके जन्मदिन को एक समारोहपूर्वक मनाना चाहते थे। तब राधाकृष्णन ने कहा कि इस दिन को मेरे अकेले के जन्मदिन के तौर पर मनाने के बजाय अगर तुम इसे शिक्षक दिवस के रूप में मनाओ तो मुझे ज्यादा अच्छा लगेगा। तभी पूरे देश में 5 सितम्बर का दिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

डॉ. राधाकृष्णन केवल शिक्षक ही नहीं थे बल्कि वे यूनेस्को और मास्को में भारत के राजदूत भी बने। आगे चलकर वे देश के पहले उपराष्ट्रपति और फिर राष्ट्रपति बने। सन् 1954 में उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वर्ष 1961 में जर्मन 'बुक ट्रेड' ने उन्हें शांति पुरस्कार प्रदान किया।

डॉ. राधाकृष्णन बड़े ही मानवीय और दयालु थे। राष्ट्रपति भवन में उनसे मिलने कभी भी कोई भी आ सकता था। उस समय उनका वेतन दस हजार रुपये था। लेकिन वे उसमें से केवल 2500 रुपये ही स्वीकार करते थे। बाकी का वेतन वे प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में दान दे देते थे। 17 जुलाई, 1975 को उनका स्वर्गवास हो गया।

प्रेरक प्रसंग : नेहा नागपाल

# हिन्दी की जीत

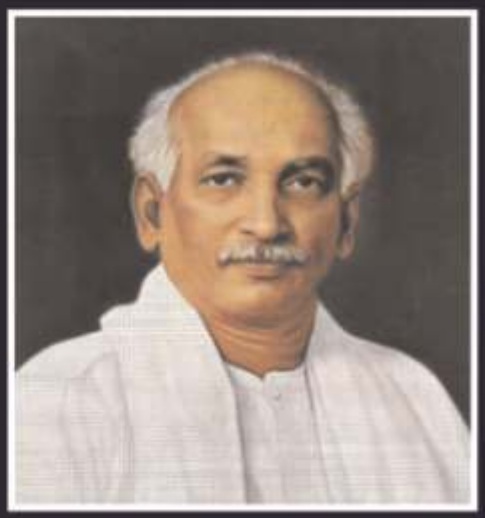

प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता और कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. पट्टाभि सीता रमैया अपने सभी पत्रों पर हिन्दी में ही पता लिखते थे। इस कारण से दक्षिण के डाकखाने वालों को बड़ी असुविधा होती थी। उन सब ने उनको कहला भेजा कि आप अंग्रेजी में पता लिखा करें ताकि डाक बांटने में आसानी हो।

डॉ. सीता रमैया ने उनसे कहा– भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। अतः मैं अपने पत्र व्यवहार में उसी का प्रयोग करूंगा।

डाकखाने वालों ने उनको धमकी दी– "यदि आप अपनी हरकतों से बाज नहीं आए तो हम आपकी सारी चिट्ठियां 'डेड लैटर' ऑफिस को भेज देंगे।"

डॉ. सीता रमैया पर इस धमकी का कोई असर नहीं हुआ। दोनों के बीच अर्से तक शीतयुद्ध जारी रहा। अन्त में डाकखाने वाले झुक ही गए। मजबूरन उन्हें मछलीपट्टणम के डाकखाने में एक हिन्दी जानने वाले आदमी को रखना पड़ा। इस तरह जीत हिन्दी की हुई।

# हिन्दी

## से है हिन्दुस्तान

हिन्दी दिवस पर विशेष प्रस्तुति : दीपक कुमार 'दीप'

हिन्दी हिन्द की आन है
गर्व हमें है हिन्दी पर,
है भाषा ये सरल बड़ी
इसकी अलग पहचान है।

हिन्दी, हिन्द का गहना है
इसे सजायें और संवारे,
दुनिया के कोने–कोने में
आओ इसको और निखारें।

हिन्दी से हैं हम और
हिन्दी से है हिन्दुस्तान,
हिन्दी मेरी हिम्मत है
इस पर वारूं तन मन प्राण।

ज्ञान हो हर भाषा का
ये उत्तम बात है,
पर मातृभाषा को पीछे रखना
ये विश्वासघात है।

हिन्दीवासी हिन्दी अपनायें
हिन्दी हो हर घर–घर में,
उन्नत होगा भारत 'दीप'
जीवन के हर सफर में।

बाल कविता : डॉ. सेवा नन्दवाल

# हिन्दी एक गुलशन

हिन्दी एक महकता गुलशन,
प्रादेशिक भाषाएं फूल।
कोई किसी की नहीं दुश्मन,
वैर–भाव होता फिजूल।।

सबका अपना महत्व है,
क्यों कहें हम ऊल–जलूल।
अंग्रेजी विदेशी सही,
पर उपयोगी यह न भूल।।

सब मिल–जुल रहें प्रेम से,
कोई किसी का बने ना शूल।
सब भाषाएं उसी से निकलीं,
संस्कृत तो है सबका मूल।।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

# वर्ग पहेली

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | | 2 | ■ | ■ | 3 |
| | ■ | 4 | | 5 | |
| 6 | 7 | | ■ | | ■ |
| ■ | | ■ | 8 | | 9 |
| 10 | | | | ■ | |
| | ■ | ■ | 11 | | |
| 12 | | | | ■ | |

**बाएं से दाएं ➔**

1. बुर्ज खलीफा टॉवर्स किस शहर में स्थित है?
4. मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति ..... करता है।
6. छत्रपति शिवाजी की तलवार का नाम।
8. मारीच की माता जिसका वध भगवान श्रीराम ने किया था।
10. जिस देश की राजधानी इस्लामाबाद है।
11. दास का एक पर्यायवाची शब्द।
12. शुद्ध शब्द छांटिए : लहसुन/लहसून

**ऊपर से नीचे ↓**

1. सुलभ का विपरीत शब्द।
2. ईरान देश का निवासी।
3. उर्मिला के ..... का नाम लक्ष्मण था।
5. बेमेल शब्द छांटिए : भेड़िया, पहाड़, बत्तख, बटेर।
7. रामायण के रचयिता महर्षि ..... थे।
8. सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक।
9. कोझीकोडे शहर का पुराना नाम : (कालीकट/कोलकाता)।
10. पैरों में पहनने का एक गहना।

(वर्ग पहेली के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बाल कविता : हरजीत निषाद

# सौ केलों का गुच्छा

स्वाद भरे पौष्टिक मीठे,
केले जी भर के खाओ।
दूध के साथ इन्हें खाकर,
मोटे ताजे हो जाओ।

केले का न बीज कोई,
जड़ से है तना निकलता।
मीटर भर लम्बे पत्ते,
पत्तों से तना है बनता।

एक तने में एक फूल पर,
सौ केले का गुच्छा।
पक कर हरे से पीला होता,
खाने में लगता अच्छा।

दूर–दूर तक दिखते केलों के,
हरे भरे हैं खेत।
पानी में उगते बढ़ते हैं,
न उगते जहाँ हो रेत।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

# माँ है बड़ी महान

ममतामयी आंचल में
खिले स्नेह के फूल,
पुत्र के प्रेम में वह
सब कुछ जाती भूल।

निर्मल ह्रदय में सदा
बहे ममत्व का जल,
आंचल को न छू पाये
पाप–कपट और छल।

सहे धूप अकेली वह
करे पुत्र पर छांव,
पीड़ा सारी झेलकर
पार लगादे नाव।

भूखी स्वयं सोकर भी
कितना रखती ध्यान,
सहती पीड़ा पुत्र की
माँ है बड़ी महान।

प्रेरक प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

# सद्भाव और सम्मान

सतरहवीं सदी की बात है। उस समय जापान के प्रधानमंत्री थे– जी. पी. शाद्र। उनके संयुक्त परिवार में करीब एक हजार व्यक्ति थे। वे सभी सम्मिलित ही रहा करते। उनमें परस्पर कभी कोई मनमुटाव नहीं हुआ। सभी खुश थे। अतएव वह संयुक्त परिवार सब के लिए चर्चा का विषय हो गया था। सभी अचरज करते कि जहाँ पाँच–दस व्यक्तियों का छोटा–सा परिवार एक साथ अच्छी तरह नहीं रह पाता है, वहाँ एक हजार व्यक्तियों का संयुक्त परिवार किस तरह खुशी–खुशी रह रहा है? यह सबके लिए एक रहस्य था।

तीसरी पीढ़ी के सम्राट एक दिन यह रहस्य जानने के लिए उनके निवास स्थान पर जा पहुँचे। उस समय प्रधानमंत्री अत्यंत बूढ़े हो चुके थे। बोलने में उन्हें कठिनाई होती। फिर भी सम्राट ने उनसे पूछा, "आपके संयुक्त परिवार में लगभग एक हजार व्यक्ति हैं। आपका इतना बड़ा परिवार कैसे मिलजुल कर रह पाता है?"

प्रधानमंत्री कुछ बोला नहीं। उसने तुरंत लिखकर जवाब दिया– 'आपसी सद्भाव और सम्मान के सहारे।'

■

## वर्ग पहेली के उत्तर

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 दु | ब | 2 ई | ■ | ■ | 3 प |
| र्ल | ■ | 4 रा | ष्ट्र | 5 प | ति |
| 6 भ | 7 वा | नी | ■ | हा | ■ |
| ■ | ल्मी | ■ | 8 ता | क | 9 का |
| 10 पा | कि | स्ता | न | ■ | ली |
| य | ■ | ■ | 11 से | व | क |
| 12 ल | ह | सु | न | ■ | ट |

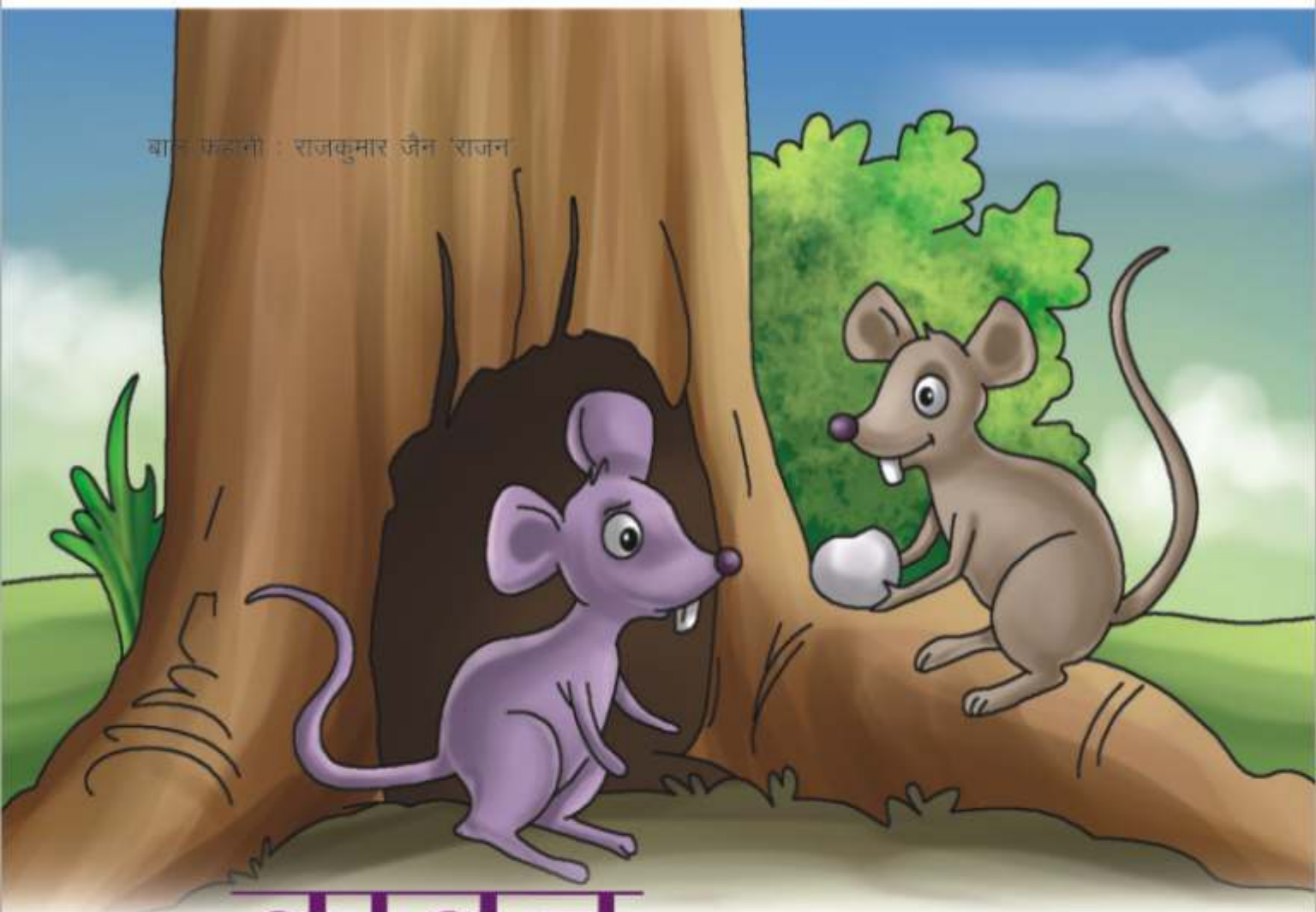

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

# लालच का फल

झींगू और ढींगू चूहों में गहरी दोस्ती थी। दोनों एक ही घने बरगद के पेड़ तले की मांद में रहते थे। झींगू बहुत ही शान्त स्वभाव का और नियम का पक्का था जबकि ढींगू गुस्सैल और लालची था।

कभी झींगू ढींगू के लिए ताजा अखरोट ढूंढ़ कर लाता तो कभी ढींगू दानेदार मूंगफली झींगू के लिए लाता। मुसीबत के समय भी दोनों एक–दूसरे की मदद करते। ढींगू के गुस्सैल स्वभाव से झींगू बहुत दुखी रहता। वह ढींगू चूहे को कई बार समझाने की कई कोशिशें कर चुका था।

एक शाम दोनों अपनी मांद में लौटे तो ढींगू चूहे के पेट में जोर से दर्द हो रहा था। हुआ यह था कि सुबह जब ढींगू भोजन की तलाश में पास के खेत की तरफ गया तो उसे वहाँ मूंगफली का ढेर दिखाई दिया।

बस, फिर क्या था। ढींगू खेत में उतर गया और लालची स्वभाव होने के कारण भूख से कहीं ज्यादा मूंगफलियां खा गया। मूंगफली होती है पचने में भारी। इसलिए शाम को उसके पेट में दर्द होने लगा। रातभर वह दर्द से कराहता रहा।

सवेरा हुआ तो झींगू बोला– "आज हम भोजन की तलाश में दूर–दूर तक नहीं जाएंगे। तुम कुछ देर आराम करो, मैं तुम्हारे लिए खिचड़ी पकाऊँगा। हल्का खाना खाने से तुम्हारा पेट ठीक हो जाएगा।"

झींगू ने बड़ी मेहनत से खिचड़ी बनाने का सामान जुटाया। गुलगुल गिलहरी से दाल ली। चिम्पू खरगोश से नमक व घी मंगवाया। भोलू कबूतर ने बर्तन दिए और मुनिया मुर्गी आग ले आई। चावल उसकी मांद में पहले से ही रखे थे। झींगू चूहा पास ही नदी से पानी ले आया। बड़ी मेहनत से खिचड़ी बनाई गई।

जब खिचड़ी बनकर तैयार हो गई तो झींगू ने ढींगू से कहा– "मैं नहाने जा रहा हूँ। लौटकर दोनों साथ–साथ खिचड़ी खाएंगे। तब तक तू आराम कर।"

झींगू नहाने चला गया तो ढींगू ने सोचा कि झींगू तो देर से वापस आएगा, तब तक मैं थोड़ी–सी खिचड़ी चखकर देख लूं कि कैसी बनी है। उसने खिचड़ी चखी तो वह उसे बहुत स्वादिष्ट लगी। उसने थोड़ी–सी और खा ली। पर वह था बहुत लालची, थोड़ी–थोड़ी करके वह अपने हिस्से की सारी खिचड़ी खा गया।

फिर भी उसका मन नहीं भरा तो उसने झींगू के हिस्से की खिचड़ी भी खा ली। उसका पेट तो पहले से ही खराब था, अब जो उसने इतनी सारी खिचड़ी अकेले ही खा ली थी तो उसका पेट फूलने लगा। वह दर्द से तड़पने लगा।

झींगू नहाकर लौटा तो ढींगू को उसने तड़पता हुआ पाया। उसने आव देखा ना ताव , झट से जंगल की डॉक्टर पूसी बिल्ली को बुलाने दौड़ पड़ा। वह खिचड़ी की बात ही भूल गया था।

ढींगू ने तड़पते हुए ढेर सारा पानी और पी लिया। पानी पीया ही था कि उसका पेट एकदम से फट गया और ढींगू चूहा वहीं ढेर हो गया।

झींगू चूहा जब डॉक्टर पूसी बिल्ली को लेकर वापस आया और उसनक ढींगू का यह हाल देखा तो उसकी आँखों में दुःख के आँसू भर आए। वह सोच रहा था कि यदि ढींगू लालच न करता और मेरे हिस्से की खिचड़ी न खाता तो उसका यह हाल न होता।

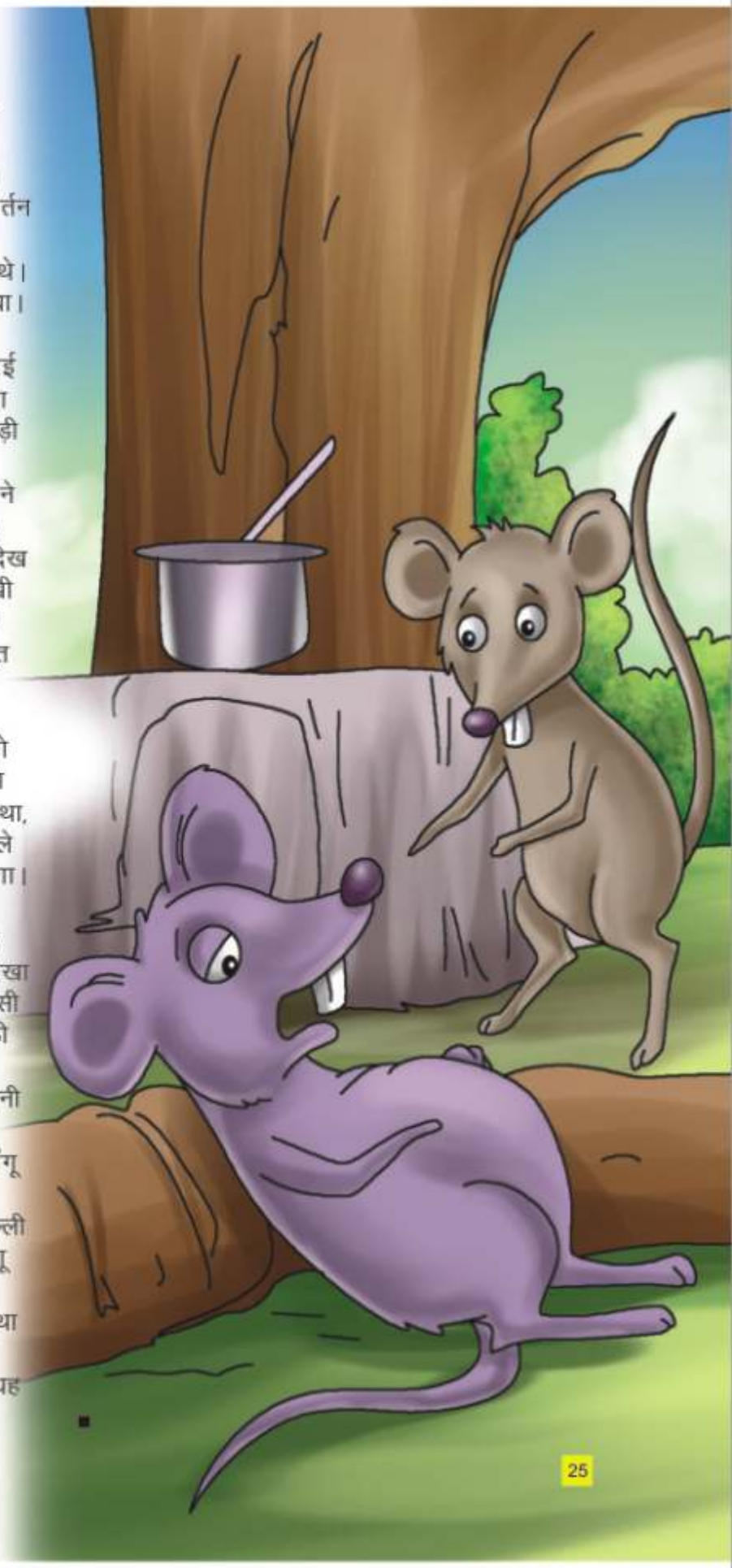

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

# सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

**नोट** : सभी प्रश्नों के उत्तर **'रा'** अक्षर पर खत्म होते हैं। पैन या पैन्सिल उठाइए और प्रश्नचिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

1. कैकेयी की किस दासी ने उसे राजा दशरथ से तीन वरदान मांगने के लिए उकसाया था?
2. किस भारतीय राज्य की राजधानी अगरतला है?
3. थर्मामीटर में किस धातु का प्रयोग होता है?
4. बाली की पत्नी का क्या नाम था?
5. भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि का क्या नाम है?
6. कार्बन का शुद्धतम रूप कौन सा है?
7. ट्रैफिक सिग्नल पर जो ट्रैफिक लाइट आगे बढ़ने का संकेत देती है, उसका रंग कौन सा होता है?
8. विश्व कप 2011 के फाइनल में भारत से पराजित श्रीलंकाई टीम का कप्तान कौन था?
9. संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान कौन सा है?
10. उत्तर प्रदेश के किस शहर में ताजमहल स्थित है?
11. सन् 1922 में किस हिंसात्मक कांड के बाद महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन वापिस ले लिया था?
12. अभिमन्यु की पत्नी का क्या नाम था?
13. मिस्र देश की राजधानी कौन सी है?
14. भारत की पहली बोलती फिल्म कौन सी थी?
15. किस त्यौहार पर रावण का पुतला जलाया जाता है?

(सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

# चार क्षणिकाएं

## छाता

ज्यादातर मैं रहूं उपेक्षित, पर सबसे है नाता।
बिना काम मुझको रखने से, हर कोई शर्माता।
तेज धूप बारिश में लगता दुकान पर तांता।
अंग–संग रहूं, चीज काम की, मित्रो मैं हूँ छाता।

## स्याही

भावों का मैं रस पी पीकर, कागज पर रख आऊं।
मैं ही जग के सुख–दुःख लिखकर, अमर काव्य बन जाऊं।
ना मैं घोड़ा, ना मैं हाथी, ना ही घड़ा सुराही।
मैं तुम सबकी परम चहेती, काली, नीली स्याही।

## कोट

सारी गरमी लुप्त रहूँ मैं, रखा रहूँ लपेट।
पर सर्दी आते हम सबके, खुल जाते हैं गेट।
मैं हूँ उसका यार कि जिसके पास भरे हैं नोट।
शान आपकी सदा बढ़ाता मुझको कहते कोट।

## टाई

शर्ट पहन लो महंगी या तुम, कोट पहन लो भाई।
पार्टी जाओ, नाचो गाओ, बजे कहीं शहनाई।
मेरे बिन तुम जम ना पाओ, सच कहती हूँ भाई।
सूट नहीं मैं, बूट नहीं मैं, देखो मैं हूँ टाई।

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

# भारत का राष्ट्रीय पशु और पश्चिम बंगाल का राज्य पशु बाघ

बाघ भारत का राष्ट्रीय पशु है। इसकी गणना विश्व के सर्वाधिक रोचक, आकर्षक और शानदार जीवों में की जाती है। बाघ का मूल स्थान साइबेरिया का बर्फीला क्षेत्र है। हिमयुग में यह सम्पूर्ण यूरेशिया में फैल गया। वर्तमान समय में यह केवल एशिया में पाया जाता है। बाघ की 8 प्रजातियां हैं। साइबेरिया का बाघ, कैस्पियन का बाघ, इंडोचीन का बाघ, भारत का बाघ, चीन का बाघ, सुमात्रा का बाघ, जावा का बाघ और बाली का बाघ। भारत में पाये जाने वाले बाघ को रॉयल बंगाल टाइगर कहते हैं। यही भारत का राष्ट्रीय पशु है।

बाघ के रहने और विकास के लिए तीन चीजें आवश्यक होती हैं– भोजन के लिए आसपास हिरन और जंगली सुअर जैसे बड़े जीव, आराम से सोने के लिए पर्याप्त छायादार एकान्त स्थान तथा पानी। इसमें सभी प्रकार की परिस्थितियों में रहने की अद्भुत क्षमता होती है। बर्फीले साइबेरिया क्षेत्र का यह जीव पथरीले पहाड़ी क्षेत्रों, घने जंगलों और दलदल वाले भागों तथा पानी से घिरे छोटे–छोटे द्वीपों में भी सरलता से रह सकता है, किन्तु रेगिस्तान के बहुत अधिक गर्म भागों में बाघ देखने को नहीं मिलता। बाघ अधिक गर्मी सहन नहीं कर पाता। यही कारण है कि यह दिन के समय गुफाओं, खण्डहरों, लम्बी–लम्बी घासों के मध्य उथले पानी अथवा दलदल में पड़ा रहता है। बाघ बहुत अच्छा तैराक होता है। सिंह, तेंदुआ आदि बिल्ली परिवार के अन्य सदस्यों के समान इसे वृक्षों पर बहुत कम ही देखा गया है। कभी–कभी यह ऐसे वृक्षों पर चढ़ जाता है, जो जमीन पर बहुत झुके हुए होते हैं। बाघ काफी ऊँचाई तक छलांग लगा सकता है। यह वृक्षों पर बैठे हुए मानव को पकड़ने के लिए कई बार 6 मीटर तक ऊँची छलांग लगा चुका है। यह आश्चर्य, अशांति, सन्तुष्टि, चेतावनी आदि के समय अलग–अलग तरह की आवाजें निकालता है।

बाघ के विषय में यह कहा जाता है कि इसकी दृष्टि बहुत कमजोर होती है। यह एक भ्रामक तथ्य है। वास्तव में बाघ की दृष्टि मानव की दृष्टि से छः गुना अधिक तेज होती है।

बाघ विश्व में भारत, बांग्लादेश, चीन, रूस, कोरिया, थाइलैंड, म्यामार (बर्मा), इन्डोनेशिया, मंगोलिया, ईरान, तुर्की आदि देशों में पाया जाता है। भारत में यह पंजाब, कच्छ और राजस्थान के रेगिस्तानी भागों को छोड़कर हिमालय से कन्याकुमारी तक सभी स्थानों पर, सदाबहार वनों, शुष्क एवं खुले जंगलो, तराई क्षेत्रों, घास के मैदानों एवं दलदल वाले भागों में देखने को मिलता है। यह सुन्दरवन के जंगलों के दलदल, कीचड़ और पानी वाले भागों में एक उभयचर के रूप में रहता है। यहाँ इसे कभी–कभी वृक्षों पर भी देखा जा सकता है।

बाघ की शारीरिक संरचना सिंह से बहुत मिलती–जुलती है। इन दोनों के कंकाल में इतनी समानता होती है कि एक विशेषज्ञ जीव वैज्ञानिक ही इनमें अन्तर बता सकता है। बाघ बिल्ली परिवार के सभी जीवों में सबसे बड़ा होता है। यह सिंह से भी बड़ा होता है, किन्तु सिंह से पतला होता है। इसकी सभी प्रजातियों के बाघ के आकार, रंग और धारियों के डिजाइन में काफी भिन्नता होती है। सामान्यतया बाघों का अध्ययन करने वाले बाघों के चेहरों की धारियां देखकर उन्हें पहचान लेते हैं।

विश्व का सबसे बड़ा और शक्तिशाली बाघ साइबेरिया का बाघ है। इसकी पूँछ सहित शरीर की लम्बाई 4 मीटर तक एवं वजन 290 किलोग्राम तक होता है। सुमात्रा का बाघ सबसे छोटा होता है। इसकी कंधों तक की ऊँचाई लगभग 75 सेंटीमीटर होती है। भारतीय बाघ साइबेरिया के बाघ से छोटा होता है। इसके शरीर की लम्बाई 3 मीटर, वजन 175 किलोग्राम से 250 किलोग्राम तक तथा कंधों तक की ऊँचाई लगभग एक मीटर होती है। बाघिन के शरीर की लम्बाई बाघ से लगभग 30 सेंटीमीटर कम होती है तथा इसका वजन भी बाघ से लगभग 45 किलोग्राम कम होता है।

बाघ की त्वचा के रंग बड़े शानदार होते हैं। इसके शरीर का अधिकांश भाग भूरापन लिये हुए सुनहरे रंग का होता है तथा पेट और नीचे का भाग सफेदी लिये हुए मटमैले रंग का होता है।

बाघ एक शक्तिशाली शिकारी वन्य जीव है। इसके दाँत शिकार को पकड़ने और उसे फाड़ने के योग्य होते हैं। बाघ के चारों पैर बड़े शक्तिशाली होते हैं। यह अपने पीछे के पैरों का उपयोग छलांग लगाने के लिए करता है, जबकि आगे के दोनों पैर शिकार करने और उसे खींचने के काम आते हैं।

बाघ जंगल का सर्वाधिक सफल शिकारी वन्य जीव है। यह निशाचर है। अर्थात् दिन के समय गर्मी से बचने के लिए किसी छायादार स्थान पर आराम करता है और रात में शिकार करता है। यह शाम को सूरज ढलने के समय शिकार की खोज में निकलता है और प्रातःकाल तक शिकार करता है।

ठण्डक और बादलों वाले मौसम में यह दिन के समय भी सक्रिय रहता है। बाघ हमेशा अकेले शिकार करता है, किन्तु कभी–कभी इसे जोड़े में भी शिकार करते हुए देखा गया है। इसका प्रमुख भोजन विभिन्न प्रकार के हिरण, गवम (एन्टीलोप), जंगली सुअर आदि हैं। इनके साथ ही यह भालू, गौर और जंगली भैंसे पर भी आक्रमण करता है। बड़े जीवों का शिकार करते समय यह प्रायः मादाओं अथवा बच्चों को अपना निशाना बनाता है। एक शक्तिशाली बाघ तेंदुए अथवा अन्य बाघ पर भी आक्रमण कर सकता है और इन्हें अपना आहार बना सकता है। सुन्दरवन का बाघ विभिन्न प्रकार की मछलियों, कुछओं, मेढकों आदि से लेकर मगर तक शौक से खाता है।

बाघ प्रायः शिकार पर पीछे से वार करता है। जंगली भैंसा और गौर जैसे जीवों का शिकार करने के लिए यह पीछे से इनकी पीठ पर आक्रमण करके इनकी गर्दन तोड़ देता है। इसके लिए यह इनकी पीठ पर सवार होकर एक हाथ से इनका कंधा पकड़ता है और दूसरे हाथ से गला पकड़ता है। इसके बाद ऊपर की तरफ दबाव डाल कर गले की हड्डी तोड़ देता है। बाघ सामान्यतया अपने शिकार को मारने के बाद किसी एकान्त स्थान पर ले जाकर आराम से खाता है, किन्तु यदि शिकार बहुत भारी हो तो यह उसी स्थान पर जल्दी–जल्दी खाता है और बचा हुआ शिकार चीलों, गिद्धों, लकड़बग्घों आदि के लिए छोड़ कर चला जाता है।

बाघ जंगली सुअर जैसे छोटे जीवों पर पीछे से आक्रमण न करके सामने से आक्रमण करता है और गला पकड़ कर इन्हें मार देता है। सुन्दरवन का बाघ बहुत अच्छा तैराक होता है। यह पानी में घुस कर शिकार पकड़ता है।

बाघिन एक बार में 2 से लेकर 7 तक बच्चों को जन्म देती है। इसके बच्चों का जन्म के समय वजन एक किलोग्राम से डेढ़ किलोग्राम के मध्य होता है। इनकी आँखें बन्द रहती हैं तथा ये पूरी तरह असहाय होते हैं। बाघ के नवजात शावकों के शरीर पर जन्म से ही काली धारियां होती हैं। इनका डिजाइन इन्हें जन्म देने वाले बाघ और बाघिन की काली धारियों के समान होता है। बाघिन बच्चों को जन्म देने के बाद इन्हें दूध पिलाती हैं तथा इनकी सुरक्षा करती है। इस समय यह बड़ी हिंसक और उग्र दिखाई देने लगती है। बच्चों के पालन–पोषण में जन्म देने वाले नर बाघ की कोई विशेष भूमिका नहीं होती, अर्थात् केवल बाघिन ही बच्चों का पालन–पोषण करती है। शावकों के जन्म के बाद कभी–कभी बाघ–बाघिन मिल कर शिकार करते हैं। इससे बाघिन और उसके शावकों को सरलता से

भोजन मिल जाता है। शावकों के पालन–पोषण में नर बाघ का बस इतना ही सहयोग होता है। सामान्यतया बाघिन अकेले ही शिकार करती है और अपने बच्चों को खिलाती है। इन शावकों के पास यदि किसी अन्य बाघ के शावक अथवा बाघ आ जाये तो ये बच्चे उसे सहन नहीं कर पाते और गुर्राने लगते हैं। बाघिन को अपने लिए सप्ताह में केवल एक बार शिकार करना पड़ता है, किन्तु उसके यदि दो या तीन शावक हों तो उसे तीसरे दिन शिकार करना पड़ता है। शावकों के साथ भोजन करती हुई बाघिन के निकट यदि कोई अन्य बाघ आ जाये तो बाघिन उग्र रूप धारण कर लेती है, किन्तु यदि शावकों का पिता आ जाये तो शान्त बनी रहती है।

बाघ के नवजात शावक लगभग दो सप्ताह तक पूरी तरह असहाय से रहते हैं। चौदह दिन में इनकी आँखें खुल जाती हैं। ये लगभग 6 माह तक बाघिन का दूध पीते हैं और इसके बाद बहुत छोटे–छोटे जीवों का शिकार करने लगते हैं। बाघिन अपने शावकों को लगभग दो वर्षों तक अपने साथ रखती है और इन्हें शिकार करना सिखाती है।

बाघ के बच्चे दो से ढाई वर्ष के मध्य वयस्क हो जाते हैं और स्वतंत्र रूप से विचरण करने लगते हैं। बच्चों के पालन–पोषण के उत्तरदायित्व से मुक्त होने के बाद मादा पुनः गर्भधारण करती है। दो गर्भकालों के मध्य का अन्तराल दो से तीन वर्ष तक हो सकता है। यह अन्तराल बच्चों के पालन–पोषण पर लगने वाले समय पर निर्भर करता है। चिड़ियाघरों में बाघिन को बच्चों का पालन–पोषण नहीं करना पड़ता। अतः यह अन्तराल बहुत छोटा होता है। एक स्वस्थ और निरोग बाघिन ग्यारह वर्ष की आयु तक प्रजनन कर सकती है।

बाघ शावकों की मृत्युदर बहुत अधिक है। प्रायः यह देखा गया है कि सामान्य परिस्थितियों में भी बाघ के चार–पाँच शावकों में केवल एक–दो ही वयस्क होने की आयु तक पहुँच पाते हैं। बाघिन अपने बच्चों का पालन–पोषण बहुत अच्छी तरह करती है, किन्तु वह बीमार और कमजोर बच्चों पर ध्यान नहीं देती, इसके परिणामस्वरुप भी कई बच्चे मर जाते हैं। बाघ शावकों की मृत्यु का दूसरा बड़ा कारण इनका मानव द्वारा शिकार है। इन सबसे यदि ये बचे रहते हैं तो लगभग 20 वर्ष की आयु तक जीवित रहते हैं।

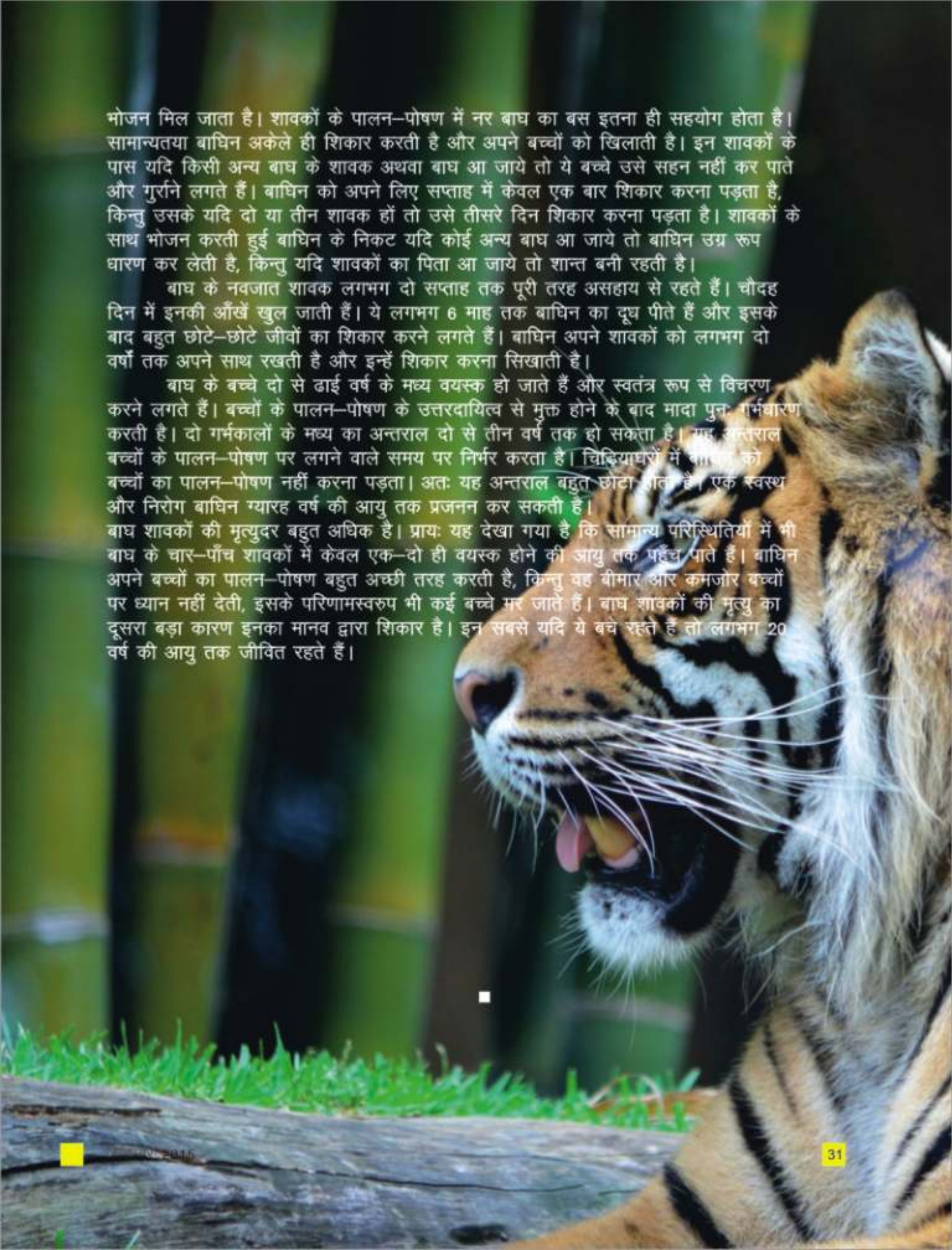

संग्रहकर्ता : भूपिन्दर धवन (लुधियाना), रामअवध राम (गुरैनी,गाजीपुर)

# अनमोल वचन

- दूसरों को पहुँचाये गये दुःख की मैल गंगा भी नहीं धो सकती।

  निरंकारी बाबा जी

- किसी से ईर्ष्या नहीं करनी बल्कि सभी से प्यार करना चाहिए।

  बाबा अवतार सिंह जी

- सद्गुरु की शरण में आने से कठोर से कठोर हृदय वाला इन्सान भी शान्त हो जाता है।

  संत वरिन्दर सिंह जी

- भलाई भी उतनी देर तक नहीं मिलती जितनी देर तक हम भलाई को अहसान समझते हैं।

- सत्संग से जुडा हुआ मनुष्य तमाम दुनियावी प्रभावों से बचा रहता है।

  एच. एस. चावला जी

- भगवान का आश्रय ले लेने वाले को किसी दूसरे के आश्रय की आवष्यकता नहीं रहती।

  स्वामी रामसुखदास जी

- किसी के गुणों की पशंसा में अपना वक्त फिजूल न गवाओ उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करो।

  कार्ल मार्क्स

- जो संयमित और मर्यादापूर्ण जीवन बिताते हुए सही रास्ते पर चलता है, वह कभी कष्ट में नहीं रहता।

  करपात्री जी महाराज

- जैसे जूते पहनकर निःशंक काँटो पर चला जा सकता है उसी तरह इन्सान तत्वज्ञान का आवरण पहनकर मन इस काँटेदार संसार में विचरण कर सकता है।

  रामकृष्ण परमहंस

- दुश्मनी जम कर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे, जब कभी हम दोस्त बनें तो शर्मिन्दा न होना पड़े।

  निर्मल जोशी

- सर्वोच्च को खोजो, क्योंकि सर्वोच्च में ही शाश्वत आनन्द है।

  स्वामी विवेकानन्द

- सर्वोत्तम बात है–सीखना। पैसा खो सकता है, सेहत और साहस साथ छोड़ सकती है, लेकिन जो कुछ आपने मस्तिष्क में रखा है, वह हमेशा आप का ही बना रहता है।

  लुईस लामूर

- जिसके साथ सत्य है वह अकेला रहते हुए भी बहुमत में है।

  डगलस

- समस्त उन्नति का आधार आत्म–निर्भरता है।

  सी हेम्पेज

- सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनन्दन यह है कि हम उसे आचरण में लाएँ।

  एमर्सन

- प्रार्थना करो कि हे प्रभु आप हमारे समस्त दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुखों को दूर कीजिये।

  यजुर्वेद

बाल कविता : रामअवध राम

# सरसों के फूल

चहुँ ओर खेतों में दिखते,
लहराते सरसों के फूल।
पीले–पीले, खिले–खिले,
मन भाते सरसों के फूल।।
ऋतु बसन्त के आते,
हर्षाते सरसों के फूल।
धरती की मुस्कान हैं ये,
मुस्काते सरसों के फूल।।
नन्ही–नन्हीं पंखुड़ियों से,
सजे–धजे सरसों के फूल।
हरी–भरी शाखाओं संग,
लिपटे सरसों के फूल।।
तेज हवाओं के थपेड़े,
सहते सरसों के फूल।
विपदाओं में धैर्य न खोते,
हँसते सरसों के फूल।।

बाल कविता : दिविता जुनेजा

# कमी है तो बस...

ना अच्छाई की कमी, ना बुराई की कमी...
कमी है तो बस सुन्दर भाव की।।

ना पहाड़ों की कमी, ना झरनों की कमी...
कमी है तो बस ममता की छाँव की।।

ना किस्मत की कमी, ना मेहनत की कमी...
कमी है तो बस निस्वार्थ देने की चाह की।।

ना वाहनों की कमी, ना उड़ानों की कमी...
कमी है तो बस उस ईश्वर की राह की।।

कमी है तो बस उस ईश्वर की राह की।।

## सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

1. मंथरा 2. त्रिपुरा 3. पारा 4. तारा 5. मथुरा 6. हीरा 7. हरा 8. कुमार संगकारा 9. सहारा 10. आगरा 11. चौरी चौरा 12. उत्तरा 13. काहिरा 14. आलमआरा 15. दशहरा

# भैया से पूछो

***प्रः संसार में सबसे कठिन काम क्या है?***
उः सदाचारी बनकर जीवन जीना।
– के. के. नागपाल (खण्डवा)

***प्रः निःस्वार्थ सेवाभावी की क्या पहचान है?***
उः वह बिना अहंकार के, बिना किसी दिखावे के एकाग्र भाव से सेवा करता है; ऐसा सेवादार सदा आनन्दित रहता है।
– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

***प्रः अगर इन्सान से कोई गलती हो जाए तो क्या करना चाहिए?***
उः पहले प्रायश्चित करें, फिर स्वयं की क्षमताओं का पुनः आंकलन कर सकारात्मक कार्यों में अपनी ऊर्जा का सदुपयोग करना चाहिए।

***प्रः इन्सान दुःख में ही परमात्मा को याद (सुमिरण) क्यों करता है?***
उः दुःख को दूर करने के लिए सहारे की आवश्यकता होती है। इसलिए दुःख दूर करने के लिए सुमिरण (प्रभु को अंग–संग जानकर उसे याद करना) करता है। सुमिरण ईश्वर से सहारा मांगने का एक सशक्त माध्यम है।
– रामशंकर गुप्ता (बिलासपुर)

***प्रः भैया जी! आज के युग में ज्ञानी कौन है?***
उः आज ही क्यों! हर युग में ज्ञानी वही होता है जो सरल, सहज व सजग जीवन जीता है।
– दीपक जेस्वानी (हिंगणघाट)

***प्रः भैया जी! मानव जीवन में दुर्लभ क्या है?***
उः स्वयं की पहचान करना।

***प्रः हमारा जीवन सार्थक कैसे हो?***
उः पूर्ण गुरु (सद्गुरु) की शरण में समर्पित होकर।
– अमनप्रीत सिंह (काईनौर)

***प्रः क्रोध का परिणाम क्या होता है?***
उः क्रोध का परिणाम हमेशा बुरा ही होता है।

***प्रः शान्ति और खुशी पाने के लिए इन्सान को किसका सहारा लेना चाहिए?***
उः ईश्वर का।
– मीनाक्षी आनन्द (कानपुर)

***प्रः अगर हँसती दुनिया में कोई रचना भेजनी हो तो हमें क्या करना होगा?***
उः रचना साफ कागज़ पर दोनों तरफ जगह छोड़कर लिखें। हो सके तो टाईप कराकर भेजें। भेजने से पहले देख लें कि रचना सकारात्मक प्रेरणाप्रद, ज्ञानवर्द्धक, शिक्षाप्रद एवं बच्चों के स्तर की होनी चाहिए।
– प्रहलाद जसवानी (मण्डला)

प्रः प्रश्न उः उत्तर

बाल कविता : रेनू भटनागर

# राष्ट्रीय पक्षी मोर

किस कदर सुन्दर मनोहर,
लगता है ये मोर।
गगन में घन देख कर,
नाच उठता है मोर।।
इसके मस्तक पर,
सुसज्जित कलगी प्यारी।
इसके परों की आभा,
भी कितनी निराली।।
अपने मुकुट में प्रभु भी,
सजाते हैं इसका पंख।
राजा इसकी आकृति का,
बनवाते हैं सिंहासन।।
कें, कें करके गुंजरित,
करता है ये वन।
इसकी शोभा से सुशोभित,
होते हैं उपवन।।
कीट, सर्प, फल–फूल,
का है मोर पक्षी।
मोर भारत का बना है,
राष्ट्रीय पक्षी।।

बाल कहानी : किशोर डैनियल

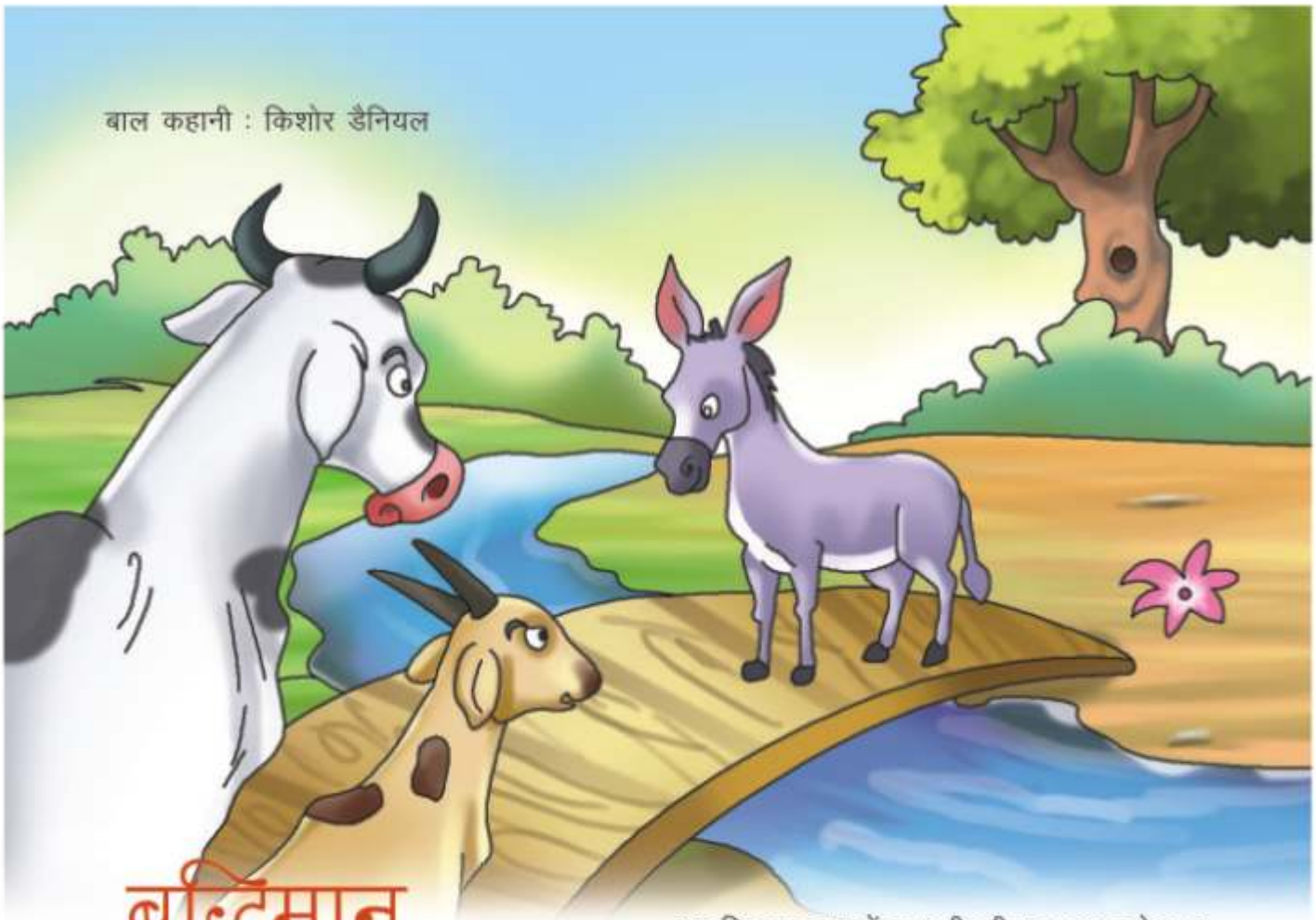

# बुद्धिमान खरगोश

चंदन वन की एक बस्ती में ढेंचूं नाम का एक अड़ियल और स्वार्थी गधा था। जंगल के बीचों–बीच एक नदी बहती थी। जिसके एक तरफ जानवरों की बस्ती थी व दूसरी तरफ घास के हरे–भरे मैदान थे। सारे जानवर घास चरने के लिए नदी के दूसरी तरफ मैदानों में जाया करते थे। लेकिन गधे को यह पसन्द न था। वह सोचता था कि मैं ही अकेला उस तरफ मैदान में घास चरने जाऊँ। वह सोचता था कि सारे जानवर घास चरने जाएंगे तो घास खत्म हो जाएगी और मैं भूखा मर जाऊँगा।

एक दिन वह घास चरने उन मैदानों की ओर चला। नदी पार करने के लिए लकड़ी का एक छोटा और संकरा पुल था। पुल इतना संकरा था कि एक बार में एक ही जीव उस पर से पार जा सकता था। अभी उसने आधा ही रास्ता पार किया था कि दूसरी ओर से एक बकरी आ गई और गधे के पुल पार करने का इन्तजार करने लगी।

बकरी को देखते ही गधे के मन में दुष्टता आ गई और उसने मन ही मन में सोचा– यह बकरी इधर का घास खाकर कितनी मोटी हो गई है। मैं इसे पुल पार नहीं करने दूँगा। बकरी बहुत देर तक प्रतीक्षा करती रही पर गधा पुल पर से टस से मस न हुआ।

इतने में एक गाय भी आकर बकरी के पास खड़ी हो गई। वह बोली– देखो इस मूर्ख गधे को, न खुद जा रहा है और न किसी को जाने ही दे रहा है। बकरी ने भी उसकी बात का समर्थन किया।

–गधे भैया, रास्ता छोड़िये, हमें उस पार जाना है, हमारा मालिक दूध के लिए इन्तजार कर रहा होगा। हमारे बच्चे भी भूख से बिलखते होंगे।– गाय बोली।

लेकिन गधे पर उसकी बात का कोई असर न पड़ा। इतने में एक कुत्ता भी वहाँ आ पहुँचा। वह भी जल्दी में था। वह जानता था कि गधा बेवकूफ और मूर्ख है। वह ऐसे ही नदी पार नहीं जाने देगा। उसने सोचा कि जोर से भौंक कर गधे को डरा सकता है लेकिन गधा उसके भौंकने से क्या डरने वाला था। बल्कि ढीठ बना वहीं खड़ा रहा।

इसी तरह बहुत से जानवर इकट्ठे हो गये और रात होने को थी।

यह सब नजारा एक खरगोश भी देख रहा था। उसने एक युक्ति सोची और एक खेत में से काफी गाजरें एक थैले में भर लाया।

खरगोश पुल पर गया और गधे से थोड़ी दूर खड़े होकर बोला– गधे चाचा, आपको भूख लगी है न? मैं आपके खाने के लिए बढ़िया और स्वादिष्ट गाजरें लाया हूँ। उसने कुछ गाजरें अपने थैले से निकाली और पीछे हट कर थोड़ी दूरी पर खड़ा हो गया।

गाजरों को देखकर गधे से रहा न गया और वह उन्हें खाने को उनके पास पहुँच गया।

इसी तरह खरगोश थोड़ा–थोड़ा पीछे हटकर खड़ा होता रहा और वहाँ गाजरें रखता रहा। गधा उन्हें खाने को आगे बढ़ता जाता। इस तरह करते–करते खरगोश गधे को पुल से दूर ले गया और पुल खाली हो गया। अब सारे जानवर बारी–बारी से पुल पार गये।

खरगोश की बुद्धिमानी और सूझ–बूझ के कारण ही सभी जानवर अपने–अपने घरों को जा सके और मन ही मन खरगोश की बुद्धि की प्रशंसा करते जा रहे थे।

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि जहाँ ताकत से काम न बने वहाँ अक्ल का प्रयोग कर मुसीबत से बचा जा सकता है। ■

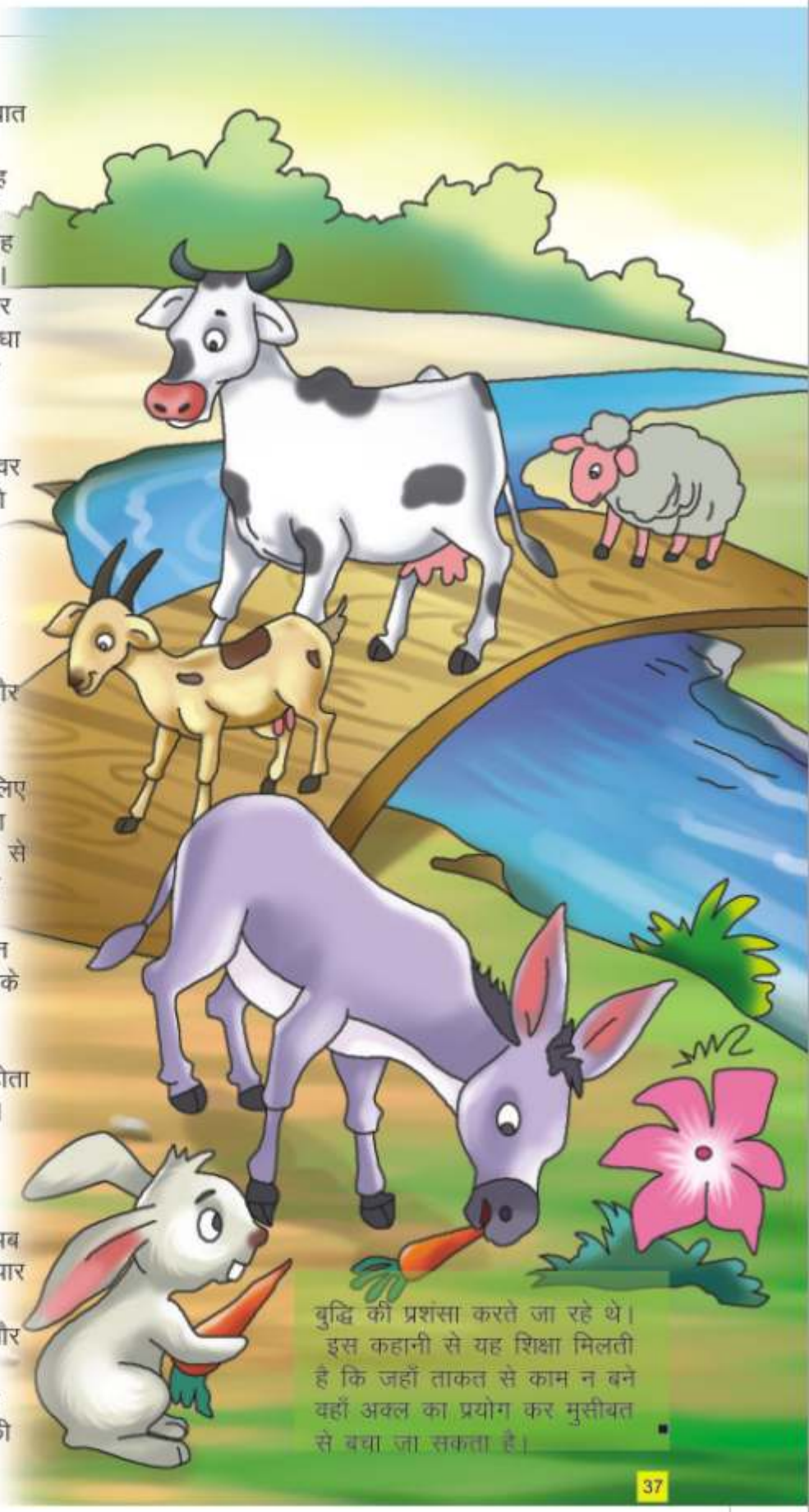

# पढ़ो और हँसो

कवि : आपको मेरी कविता पसन्द आई?
श्रोता : मुझे उसका अन्त सुन्दर लगा।
कवि : किस जगह?
श्रोता : जब आपने कहा कि कविता समाप्त हुई।

---

शिक्षक : लक्की, तुम बार–बार नीचे क्यों झुके जा रहे हो? नींद आ रही है क्या?
लक्की : नहीं गुरुजी, यह तो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण हो रहा है।

---

मालिक : (नौकर से) नौकरी की शुरुआत में तुमने कहा था कि तुम कभी नहीं थकते और तुम टांगे फैलाए सो रहे हो।
नौकर : जी मालिक! यही तो मेरे न थकने का राज है।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

---

दो मूर्ख किसी तानाशाह का तख्ता पलटने का समाचार सुन रहे थे। एक बोला– जब उन्हें पता है कि उनका तख्ता पलटने वाला है तो वे अपने तख्ते को अच्छी तरह से फैवीकोल लगा कर फिक्स क्यों नहीं करवा लेते।

विवेक : अरे रवि! हाथ में चोट कैसे लगी?
रवि : मैंने गाय के दांत गिनने के लिए मुँह में हाथ डाला। उसने मेरी अंगुली गिनने के लिए मुँह बंद कर लिया।

– लवलेश खनेजा (दिल्ली)

नेताजी : मुझे वोट दीजिए। मैं आपके गाँव को जन्नत बना दूँगा।
ग्रामीण : मगर साहब! हमें तो अभी जिन्दा रहना है।

---

सेल्समैन ने एक घर के सामने खेलते एक बच्चे से पूछा– क्यों बेटे, तुम्हारी मम्मी घर में हैं?
बच्चे ने कहा– हाँ घर में ही है।

सेल्समैन ने दरवाजा खटखटाया। पांच मिनट हो गये, फिर भी किसी ने दरवाजा नहीं खोला। सेल्समेन ने लगभग आधे घंटे तक हर पांच–दस मिनट के बाद दरवाजा खटखटाया लेकिन दरवाजा फिर भी नहीं खुला। उसने गुस्से से बच्चे से कहा– तुमने तो कहा था कि तुम्हारी मम्मी घर में ही है? मैं पिछले आधे घण्टे से दरवाजा खटखटा रहा हूँ पर कोई दरवाजा नहीं खोलता?
बच्चा बोला– हाँ वह तो घर में ही है लेकिन यह मेरा घर थोड़े ही है।

– लक्की (गोंदिया)

भिखारी : (राहगीर से) असल में मैं एक लेखक हूँ। मैंने एक पुस्तक लिखी है। पैसे कमाने के सौ तरीके।
राहगीर : तो फिर तुम भीख क्यों मांग रहे हो?
भिखारी : यह भी उनमें से एक तरीका है।

---

एक जेबकतरा परेशान था। दूसरे ने पूछा– क्या बात है?
पहला– यह सर्दी का मौसम धंधे के लिए बहुत बुरा है। जिसे देखो जेब में हाथ डाल कर ही घूम रहा है।

---

मेजबान : (मेहमान से) ठंडा पिएंगे या गर्म?
मेहमान : जब तक गर्म नहीं आता ठंडा चलेगा।
मेजबान : (नौकर से) रामू साहब के लिए फ्रिज से एक गिलास ठंडा पानी और गीजर से एक गिलास गर्म पानी ले आओ।

---

एक दोस्त दूसरे से– तुम बहुत अच्छी स्विमिंग कर लेते हो कहाँ सीखी?
दूसरा दोस्त– पानी में।

---

एक हास्य कवि सम्मेलन में मंच संचालक ने श्रोताओं से कहा– देखिये साल में 12 महीने होते हैं। और संयोग से इस समय मंच पर कवि भी 12 ही हैं। मैं हर महीने के हिसाब से एक कवि को मंच पर बुलाऊँगा। यह कहकर उन्होंने एक कवि का नाम लिया तो एक नाटे कद के कवि माइक के सामने आ खड़े हुए।
उन्हें देखते ही कई श्रोता एक साथ बोल पड़े– अरे भाई, यह फरवरी के महीने को सबसे पहले क्यों बुला लिया।

---

पागलखाने में काम करने वाला एक कर्मचारी घर आकर पत्नी से बोला– इन पागलों के बीच रहते रहते मैं तो आधा पागल हो गया हूँ।
पत्नी बोली– कभी कोई काम पूरा भी कर लिया करो। हर काम आधा ही करते हो।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

कहानी : साकलचन्द पटेल
अनुवाद : शिवचरण मंत्री

# गूंगी पेन बहन

एक थी पेन। रंग कोयल–सा काला। उम्र ढाई साल।
पेन गूंगी थी। उसे बोलना नहीं आता था।
उसे जब भी कुछ खाना होता तो वह मम्मी के पास आती। उसका हाथ पकड़ कर गरम चीजें बताती। इशारा करके कहती– 'यह–यह...।'
मम्मी रोटी देकर कहती– 'जा, बाहर बैठ कर खा।'
चाय बनती तो कटोरी लेकर आती। मम्मी को अंगुली से, इशारे से कटोरी बता कर कहती– 'यह...यह...।'
मम्मी चाय देकर कहती– 'जा, कोने में बैठ कर पी ले।'
चाय पीकर वह अकेली ही खेलती। पापा ने उसे एक गुड़िया लाकर दी। वह उससे खेलती रहती। गुड़िया की नीली आँखों में अंगुली डालती। उसके गुलाबी गाल की पप्पी लेती। तत्पश्चात् उसे लेकर घर में घूमती।
मम्मी कहती– 'जा बाहर जाकर खेल।'
पेन बाहर जाकर अकेली खेलती। थक जाने पर घर में आती। मम्मी उसे देखकर कहती– 'जा बाहर खेल, घर में मत खेल।'
पेन गुड़िया लेकर बाहर जाती। गुड़िया को छाती से सटा कर घूमती। अकेलेपन से थक कर घर में आती। मम्मी उसे घर में आया देख डांटती– "तुझे कितनी बार कहा कि बाहर जा कर खेल।" पर पेन वहीं खड़ी रहती। वह सिर नीचे कर लेती। मुँह फूल जाता। आंखें ऊपर कर आकाश को देखती रहती।
–"जा, क्या तूने नहीं सुना? खड़ी रह, तू ऐसे नहीं मानेगी।" मम्मी उसके पास आकर डांटती हुई उसका हाथ पकड़ कर उसे टेबुल के पास ले गई। टेबुल की दराज खोली और पेन को दराज में रखा और दराज बंद कर वहाँ से चल दी।
दराज में काला घना अंधेरा था। पेन अंधेरा देख कर डरी। वह बाहर आना चाहती थी, परन्तु वह कैसे बोले। उसे बोलना कहाँ आता था? दराज में उसे अकुलाहट हो रही थी।

कागज ने पूछा– 'क्यों, क्या तुझे बोलना नहीं आता है?'

'नहीं'। पेन ने गर्दन हिला कर मना किया।

"ओह! तू तो गूंगी है। चल मैं तुझे बोलना सीखा देता हूँ।"– कागज ने पेन का हाथ पकड़ कर कहा।

अब कागज ने अपना हाथ लम्बा करके कहा– 'ले, मेरे पर लिख– 'दादा'।

पेन ने लिखा – 'दादा'।

कागज ने पेन से कहा– "अब तू अपना मुँह खोल और बोल– 'दादा।"

पेन ने मुँह खोल कर कहा– 'दादा'।

"ले पेन तुझे बोलना आ गया।" कागज ने तालियां बजाते हुए कहा।

पेन बहुत खुश हुई।

तत्पश्चात् पेन कागज को लेकर दौड़ पड़ी और मम्मी के सामने कागज रख कर बोली– 'दादा।'

मम्मी उलाहना देती, पर पेन को बोलते देख उसने उसको आनन्दित होकर गोद में उठाकर कहा– ओह, मेरी प्यारी बच्ची, ओ मेरे चाँद...।

इसी समय टेबुल पर से आवाज सुनाई पड़ी– 'फड़...फड़...फड़।'

पेन ने भी ध्यान देकर सुना– 'फड़...फड़...फड़।'

पेन ने दराज में से ही टंकारे मारे– 'टक...टक... टक...।'

'कौन है?' कागज ने टंकारे सुनकर इधर–उधर देखकर पूछा। फिर से टंकारे सुनाई पड़े– 'टक... टक...टक...।'

टंकारे दराज से आ रहे थे। अतः कागज ने दराज खोली। पेन देखकर कागज बोला– ओह! तब तो पेन तू ही टंकारे मार रही है?"

पेन ने गर्दन हिला कर हाँ कहा।

पेन बाहर आई। टेबुल पर बैठ कर पेन और कागज खेलने लगे। पेन की गोद में गुड़िया थी। उसकी नीली आंखों पर अंगुली रखकर कागज की ओर देख रही थी।

कागज ने कहा– 'नयन।'

तत्पश्चात् कागज ने गुड़िया के मुँह पर अंगुली रखी।

पेन कागज की ओर देखती रही। कागज ने कहा– 'बोल, इसे क्या कहा जाये।'

पेन मुँह में अंगुली दबाए चुप रही।

# किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

किट्टी झूठ मत बोलो, बताओ क्या बात है?
आज मेरा जन्मदिन है और किसी ने मुझे मुबारकबाद नही दी, मम्मी भी भूल गई इस बार मेरा जन्मदिन!
बस इतनी सी बात और तुम रो रही हो! चलो, आंसू पोछों! मम्मी घर के कामों में व्यस्त होगी इसलिए भूल गई होगी, नही तो वह हमेशा तो तुम्हारा जन्मदिन मनाती थी न!
हाँ तुम ठीक कह रही हो, ऐसा ही हुआ होगा
किट्टी स्कूल के बाद मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर चलूँगी और वहाँ चलकर तुम्हारा जन्मदिन मनाएंगे।
पक्का मिन्टी! हाँ हाँ तुम जरूर चलना मेरे घर!

किट्टी चलो, स्कूल की छुट्टी हो गई।
हाँ चलो मिन्टी तुम भी देखना घर में किसी को भी मेरा जन्मदिन याद नही है।
यह है मेरा घर, चलो अन्दर चलो मिन्टी! अरे ये क्या घर में इतना अंधेरा क्यों है? तुम रूको मैं देखती हूँ। ऐसा लग रहा है कि घर में शायद कोई नही है?
किट्टी कहीं लाईट तो नही चली गई?
मिन्टी तुमने ठीक कहा चलो, लाइट चालू करके देखती हूँ। अरे लाइट तो आ रही है।
अरे किट्टी घर की सजावट तो देखो कितना सुन्दर सजा हुआ। कितने सुन्दर रंग–बिरंगें गुब्बारे लगे हुए है।
अरे यह तो केक है और इस पर तो मेरा नाम लिखा हुआ है।

जन्मदिन बहुत–बहुत मुबारक हो किट्टी बेटा! यह लो अपने जन्मदिन का तोहफा!
मम्मी जी आप! क्या आपको मेरा जन्मदिन याद था?
हाँ बेटा, और मैं कैसे भूल सकती हूँ कि आज मेरी रानी बेटी का जन्मदिन है।
किट्टी रानी मम्मी बहुत ही अच्छी होती है वह कभी हमारा जन्मदिन नही भूलती है। वह हमसे बहुत प्यार करती है।
तुमने ठीक कहा मिन्टी, मम्मी सच्ची में बहुत ही अच्छी होती है।
चलो, किट्टी बेटा, अब अपने जन्मदिन का केक काटो, और मिन्टी को खिलाओ।
हाँ हाँ मम्मी जी और आप सभी का बहुत ध्न्यवाद! मैं अपना यह जन्मदिन कभी नहीं भूल पाऊँगी।

# जन्मदिन मुबारक

सिमरन (सैपऊ)

गीत (जबलपुर)

प्रितिका (बड़ोदरा)

आकृति, प्राकृति (कठुआ)

सन्दीप (बड़ोदरा)

खुशप्रीत (रामपुराफूल)

शिवम (मलाड)

विभोर (कानपुर)

रतिका (चण्डीगढ़)

विश्वप्रीत (पत्तनपुर)

लीना (भुसावल)

हूनर (जरीपटका)

माही (नानतोंग)

सिमरन (पांचुपुर)

नीव (कानपुर)

भाविका (उमरी)

खनीव (सूरत)

राजदीप (मण्डी बरीवाला)

आस्था (गोरौल)

मुस्कान (गोरौल)

हेमित (रैयाना)

अभिषेक (दिल्ली)

महक (करनाल)

दीपांशु (होडल)

हिमांशु (इलाहाबाद)

अनुज (चण्डीगढ़)

अलिशा (मोहाली)

खुशबू (रायपुर)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

**फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।**

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

## आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का पाठक हूँ। मैं इसका हर माह बेशबरी से इन्तजार करता हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। इसमें कहानियां, कविताएं तथा महापुरुषों से जुड़े प्रेरक–प्रसंग शिक्षाप्रद होते हैं।

मेरी प्रभु–परमात्मा, निरंकार से यही प्रार्थना है कि यह पत्रिका दिन–दुगनी, रात चौगूनी तरक्की करे।

प्रतीक (नागपुर)

मैं हँसती दुनिया की सदस्य हूँ। मुझे हँसती दनिया बहुत अच्छी लगती है। इसमें 'भैया से पूछो' और 'सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी' बहुत ज्ञानवर्द्धक होते हैं। चित्रकथाएं 'किट्टी' और 'दादा जी' तथा कहानियां एवं कविताएं बहुत रोचक और शिक्षाप्रद होती हैं।

मैं खुद भी यह पत्रिका पढ़ती हूँ और अपनी सहेलियों तथा भाई बहनों को भी पढ़ाती हूँ। इतनी अच्छी पत्रिका के लिए आपको बहुत–बहुत धन्यवाद।

सृष्टि (नोएडा)

मैं हँसती दुनिया का सदस्य हूँ और इसका मैं बेशबरी से इन्तजार करता हूँ। जैसे ही हँसती दुनिया आती है। वैसे ही मैं इसे पढ़ने बैठ जाता हूँ।

जून अंक में कहानियों में 'मैं खीर नहीं खाऊँगा' (अनिल सतीजा), 'क्या श्रेष्ठ है?' (राधेलाल नवचक्र) एवं 'गुस्से का परिणाम' (अंकुश्री) तथा कविताओं में 'स्वच्छता हमारे जीवन का' (हरजीत निषाद) एवं 'जल जीवन है' (मदन शेखपुरी) काफी पसन्द आई।

लेख 'इतिहास चॉकलेट और कोकोआ वृक्ष का' (गोपाल जी गुप्त) काफी जानकारीपूर्ण लगा।

आशीष कुमार (दिल्ली)

हँसती दुनिया का जुलाई अंक प्राप्त हुआ। हँसती दुनिया, आप ने पूछा है आप का नया रूप पसंद आया? जी हाँ, मुझ 70 वर्षीय बच्ची को आप का नया रूप बहुत बहुत पसंद आया।

पहले तो मुख पृष्ठ के आकर्षण ने अपनी ओर कर लिया फिर भीतर की सजधज और अच्छी–अच्छी रचनाएं तो हमें दीवाना बना गई।

डॉ. बानो सरताज (चन्द्रपुर)

## जुलाई अंक रंग भरो परिणाम

**प्रथम :**

**रवि कुमार कुकड़ेजा**
14 वर्ष
पुत्र/श्री राजेश कुमार
डाकघर के पास, खुई–खेड़ा,
जिला : फाजिल्का (पंजाब)

**द्वितीय :**

**अर्पित राय**
12 वर्ष
पुत्र/श्री राजन राय
140/16, गली नं. 53,
बी. ब्लाक, हनुमान कुंज,
बंगाली कालोनी, दिल्ली

**तृतीय :**

**वैभव किशोर**
10 वर्ष
पुत्र/श्री हरगोविंद सिंह
गाँव : डांगोली
जिला : मथुरा (उ.प्र.)

**इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–**

इशाना खट्टर (आगरा),
अक्षय कुमार (चण्डीगढ़),
निधि रावत (अगस्त्यमुनि),
पुनीत कुमार (नौशेरा),
संजना (गाँधी नगर),
अमन गोयल (सैपऊ),
प्रभप्रीत (नागपुर),
आशीष भण्डारी (आमपाटा),
सुहावनी (मोतिया खान, दिल्ली),
अंकुश (सेहवान),
आभिष (नेशनल कालोनी, भटिण्डा),
यवनिका (भरमोटी कलां),
परी कुमारी (रामपुर),
जगरूप सिंह पाल (अधोया),
नितिन कुमार (कोटला),
सिमरण गुप्ता (जैन कालोनी, बल्लभगढ़), पारूल (मालवीय नगर, जयपुर),
दीपिका (ओबरा),
सागर चौधरी (बेलउख),
हार्दिक पण्डया (आजना),
तारुशी (चण्डीगढ़),
सिमरन चोपड़ा (फगवाड़ा)

## सितम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर 15 सितम्बर तक कार्यालय हँसती दुनिया, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

सर्वश्रेष्ठ चित्रों के तीन प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) नवम्बर अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता अवश्य भरें।

# रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

TU HI NIRANKAR

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SUPER AQUA®

R.O. System

WHITE GOLD®

AQUA FRESH

Reverse Osmosis

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

Wholesale & Retailer of all type of **Water Purifier, Water Dispenser, R.O. System & Commercial R.O System 100 to 500 Ltr.**

Free Gift
(5Ltr. Cooker)

Free Gift
(Juicer Mixer)

Free Gift
(Toaster)

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

FREE DEMO
WATER TESTING

आसान किस्तों पर उपलब्ध
0% FINANCE

for enquiry call Customer Care

**09650573131**

(Arvind Shukla)

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

**SATGURU HOME APPLIANCES**
**(Call. 09910103767)**

**Head office.** E-1/23, Ground Floor Sec-16, Rohini Nr. Jain Bharti Public School, Delhi-110085

**Mumbai office.** Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex Nr. T.V Tower, Badlapur (East) Thane, Maharashtra,

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा, दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएं।

**MUBAI** : Vorivali, Kurla, Dadar, Thane, Ulhas Nagar, Kalyan, Badlapur **MAHARASHTRA** : Pune, Aurangabad, Varsa, Nagpur, Buland, Kohlapur **SOUTH INDIA** : Hyderabad, Belgaum **UTTAR PRADESH** : Allahabad, Gorakhpur, Mathura, Agra, Kanpur, Jonpur, Lucknow, Azamgarh **UTTRAKHAND** : Dheradun, Haldwani, Rishikesh, Haridwar **PUNJAB** : Chandigarh, Hoshiarpur, Bhatinda, Patiala, Jalandhar, Ludhiana **BIHAR** : Patna, Samastipur, Darbhanga, Gaya, Bhagalpur **WEST BENGAL** : Kolkata, Sealldah **RAJASTHAN** : Jaipur, Jodhpur

# NIRANKARI JEWELS REGD.

A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

## GOVT. APPROVED VALUERS

78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009

*TELE : (Showroom)*

27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133

E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
: Licence No. U (DN)-23/2015-17
: Licenced to post without Pre-payment

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)